thearyasamaj.org

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

दिसम्बर 2014

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी के 79वें जन्मोत्सव पर

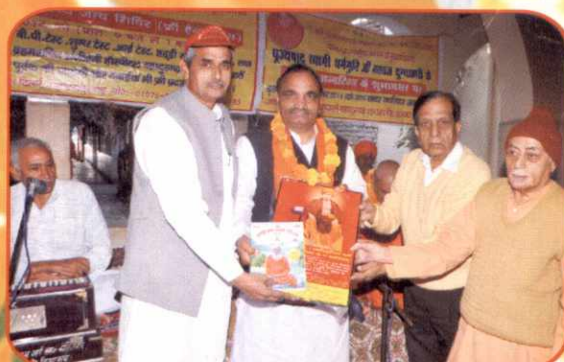

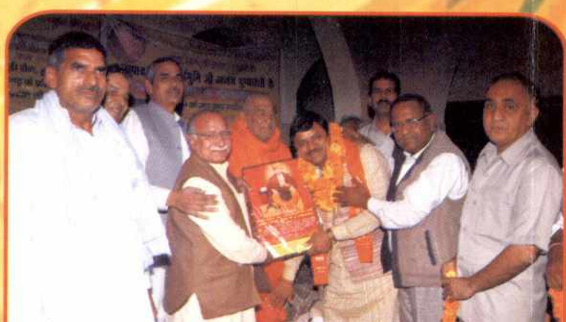

1. निःशुल्क स्वास्थ जांच शिविर का उद्घाटन करते हुए चौधरी रतन सिंह जी प्रधान, निजामपुर, दिल्ली, बाएं से श्री राजपाल जी, श्री दर्शनकुमार जी अग्निहोत्री, श्री श्रीओम जी अहलावत, स्वामी धर्ममुनि जी एवम् श्री सत्यानन्द जी आर्य।

2. श्री श्रीओम अहलावत जी को स्मृति चिन्ह देकर स्वागत करते हुए श्री सत्यपाल सिंह जी वत्स आर्य, श्री दर्शन कुमार जी अग्निहोत्री एवम् पुरुषार्थ मुनि जी।

3. श्री नरेश जी कौशिक विधायक, बहादुरगढ़ को स्मृति चिन्ह देकर स्वागत करते हुए मास्टर करतार सिंह जी, सत्यपाल वत्स आर्य, श्री कन्हैया लाल जी आर्य, स्वामी धर्ममुनि जी, गुप्ता जी, श्री धर्मवीर जी एवम् श्री तेजपाल सिंह जी प्रधान

thearyasamaj.org

ओ३म् ओ३म्

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

आत्मशुद्धि-पथ के नये संरक्षक सदस्य बनें

श्रीमती प्रेमरानी पत्नी पं. रामदर्शन शर्मा महावीर पार्क, बहादुरगढ़, आत्मशुद्धि पथ मासिक पत्रिका के संरक्षक सदस्य बनें। आप दोनों वैदिक संस्कृति से जुड़े हुए है। यज्ञ, समाजोन्नति, धर्म, दर्शन एवं परोपकार में विशेष रूचि रखनेवाले हैं। जीवन बड़ा ही सहज, सरल और स्वाभाविक है। दोनों मिलनसार है। प्रभु कृपा से परिवार सुख, शान्ति को ओतप्रोत है। पुत्र पौत्रों से परिवार समृद्धि के साथ जीवन की उन्नति की ओर अग्रसर है। आत्मशुद्धि पथ परिवार आपकी सुख समृद्धि एवं दीर्घायु की मंगल कामना करता है।

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

871

श्री जगवीर सिंह दलाल
तरूण निकेतन, पीतमपुरा, दिल्ली

872 सुभाष चन्द्र सैनी
सी-323, यमुना इन्क्लेव,
पानीपत-132103

प्रिय बन्धुओं! मास दिसम्बर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी जनवरी अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

\- व्यवस्थापक

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

मार्गशीर्ष-पौष सम्वत् 2071 दिसम्बर 2014

सृष्टि सं. 1972949114 दयानन्दाब्द 191

वर्ष-13) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-12

(वर्ष 44 अंक 12)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', मो. 9416054195

आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

❖

सह सम्पादक

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, डॉ. मुमुक्षु आर्य

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापकः चन्द्रभान चौधरी

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,
rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
आश्रम समाचार	6
वेद सन्देश	7
सम्पादकीय : मौन का स्वरूप	8
निर्विचार समाधि में उपलब्ध होता है आध्यात्मिक प्रसाद	9
यज्ञ क्यों करें? यजुर्वेद	11
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र	13
एक मुलाकात स्वामी दयानन्द से	16
मांसाहार-कितना हानिकारक	21
अन्त्येष्टि संस्कार अथवा मृतक संस्कार (विधि)	24
भजन	26
वो रास्ता	26
हंसो और हंसाओ	26
ब्रह्मचारी	27
श्रद्धा-सुमन	28
महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द और गुरुकुल..	29
महामना मदन मोहन मालवीय की 153वीं जयन्ती	32
दान सूची	33

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

thearyasamaj.org

फर्रुखनगर आश्रम का यज्ञ व मासिक सत्संग सम्पन्न

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव का मासिक सत्संग दिनांक 9 नवंबर 2014 को उत्साह और श्रद्धा के साथ सम्पन्न हो गया। सायं 3 बजे स्वामी धर्ममुनि जी के ब्रह्मत्व में महाशय हीरालाल जी ने यज्ञ कराया। जिसमें विभिन्न यजमानों ने श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान की। स्वामीजी जी ने सामूहिक रूप से यजमानों को आशीर्वाद दिलाया। उसके बाद महाशय हीरालाल जी एवं रामदेव जी द्वारा सुमधुर एवं प्रेरणादायी भजनों का सुन्दर कार्यक्रम चला। इस अवसर पर वकील जयनारायण जी, श्री राजवीर जी आर्य ने अपने प्रेरणादायी विचार रखे। वानप्रस्थी ईशमुनि जी ने स्वास्थ्य सुधार और यज्ञ महिमा, पर अपने सुन्दर विचार रखे। स्वामीजी जी ने वेद मन्त्र के आधार पर मानव निर्माण पर अपने वक्तव्य में कहा कि प्राचीन ऋषियों को समझ करके अपने भविष्य का सम्यक् निर्माण करना चाहिए और जीवन में प्रसन्न रहने की कला पर विस्तार से प्रकाश डाला। अपने वक्तव्य का उपसंहार करते हुए आगामी कार्यक्रमों की सूचनाएं प्रदान की। शान्तिपाठ के बाद प्रसाद वितरण हुआ।

दान की प्रेरणा

श्री नितिन चुघ (जे.के. पोलीफैब, एम.आई.ई. पार्टस बी), बहादुरगढ़ ने अपने परिवार द्वारा एकत्रित किये गुल्लक दान से 1468 रूपये आत्मशुद्धि आश्रम को प्रदान किये। दो-दो रूपये गुल्लक में डालकर परोपकार के कार्य में प्रदान करना यह सुनिश्चित रूप से प्रेरणादायी कार्य है। हमें भी उनसे प्रेरणा लेकर गुल्लक दान कर मानवता की सेवा करनी चाहिए। आश्रम परिवार श्री चुघ परिवार की सुख समृद्धि एवं स्वास्थ्य की मंगल कामना करता है।

> आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है।
>
> **-राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084**

वस्त्र प्रदान किये

वानप्रस्थी पुरुषार्थ मुनि जी, स्वामी धर्ममुनि जी के कर कमलो द्वारा छात्रों को सर्दियों की जर्सियां प्रदान करते हुए।

श्री रोहन तुषार अरोड़ा द्वारिका, सैक्टर-22 ने आत्मशुद्धि आश्रम के छात्रों के लिए जर्सियों के लिए 5000/- रूपये दान में दिये। आत्म शुद्धि आश्रम आपकी सुख समृद्धि तथा दीर्घायु की कामना करता है।

श्रीमती कौशल्या चौधरी दिवंगत

श्रीमती कौशल्या चौधरी, धर्मपत्नी स्व. पूर्णचन्द्र जी भगत, सैक्टर-7, गुड़गांव का दिनांक 30.11.2014 को अस्वस्थ होने के कारण दिवंगत हो गयी। आप निष्ठावान आर्यसमाजी, यज्ञप्रेमी, ईश्वर भक्त, सहस सरल आदि गुण से सम्पन्न थी। आपके तीन पुत्र चौ. जवाहर सिंह, चौ. प्रताप, चौ. सुरेश चौ., दो पुत्रिया श्रीमती कृष्णा आर्या, श्रीमती शशि आर्या आदि पुत्र पौत्रों से भरे परिवार को छोड़कर गयी है। आपने जीवन रहते अपने दोनों नेत्र दान कर दिये। आप समय-समय पर आत्म शुद्धि आश्रम में आकर ध्यान साधना शिविर में भाग लेती रही है और आश्रम की श्रद्धा भाव से सहयोग करती रही। आपकी शान्ति सभा दिनांक 02.12.2014 को स्वामी धर्ममुनि जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सभी विद्वानों ने आपके गुणों की चर्चा करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना की तथा शोकाकुल परिवार जनों का मनोबल बढ़ाया। शान्ति पाठ के बाद सभा सम्पन्न हुई। आपके परिवार ने अस्थियों को गंगा में विसर्जित न करके सुरक्षित भूमि में दवा दिया गया। हमें भी इससे प्रेरणा लेनी चाहिए।

thearyasamaj.org

आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गांव के प्रधान मा. सोमनाथ जी आर्य को सम्मानित करते हुए आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री, विकासपुरी तथा अन्य महानुभाव

श्रीमती उर्मिला आर्या दिवंगत

आर्य समाज शिवा जी नगर, गुड़गाँव के वरिष्ठ उपप्रधान श्री महेन्द्र प्रताप आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला आर्या हल्की सी बीमारी से दिवंगत हो गई। स्मरण रहे कि श्रीमती उर्मिला आर्या को अपने पूज्य पिता (स्व. श्री धर्मेन्द्र शास्त्री जो आर्य जगत के उच्च कोटि के पुरोहित एवं आर्य समाज शिवा जी नगर के संस्थापक थे) से वैदिक संस्कार प्राप्त हुए थे। उन्हीं संस्कारों के फलस्वरूप अपने पूरे परिवार को आर्यत्व में रंग रखा था। उनका निधन 68 वर्ष की आयु में हो गया है। वह अपने पीछे अपने पति श्री महेन्द्र प्रताप आर्य, दो सुपुत्र दीपेन्द्र प्रताप, जितेन्द्र प्रताप एवं एक पुत्री श्रीमती निर्मल को छोड़कर गई है। आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं गुरुकुल झज्जर तथा कई गोशालाओं को सहयोग इस परिवार से मिलता रहता है। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति की प्रार्थना करते हैं।

- कन्हैया लाल आर्य, संरक्षक

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें। **–विक्रमदेव शास्त्री**

स्वामी दयानन्द सरस्वती के 131वे बलिदान समारोह के अवसर पर पुस्तक का विमोचन करते हुए डॉ. धर्मवीर जी, मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर, श्री कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम ट्रस्ट, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर, राजस्थान तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति।

आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक श्री सोहन लाल मनचन्दा दिवंगत

श्री सोहन लाल मनचन्दा 15 दिन तक अति रूग्ण होने के कारण दिनांक 14.10.2014 को दिवंगत हो गये। श्री मनचन्दा जी आत्मा शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ ट्रस्ट के उपप्रधान श्री कन्हैया लाल आर्य के समधि थे। उनके निधन से समाज से एक निष्ठावान एवं समर्पित व्यक्ति का अभाव हो गया। वह विनम्रता और सरलता की प्रतिमूर्ति थे। आत्मशुद्धि परिवार के साथ पिछले 10 वर्षो से सम्बन्धित रहे और यदा कदा आश्रम का सहयोग भी करते रहे। उनका निधन 66 वर्ष की आयु में हुआ। वह अपने पीछे अपनी पत्नी श्रीमती सरोज मनचन्दा एवं तीन पुत्रियों श्रीमती सीमा (विनोद) मैहता, इन्द्र (दिनेश) आर्य, अलका (सुशील) मल्होत्रा को छोड़ कर गये हैं। आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फरूर्खनगर के सभी सदस्य, ट्रस्टी, कार्यकर्त्ता एवं अधिकारीगण की मनचन्दा जी के आकस्मिक निधन के समाचार जानकर हार्दिक रूप से श्रुब्ध हैं। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति की प्रार्थना करते हैं।

thearyasamaj.org

स्वामी धर्ममुनि जी का 79वां जन्मोत्सव हर्षोल्लास व भजन संध्या पूर्वक मनाया गया

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फरूर्खनगर गुड.गांव के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी का 79वां जन्मोत्सव बृहद्यज्ञ, नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर एवं भजन संध्या कार्यक्रम के साथ स्वामी सवितानन्दजी की अध्यक्षता में उत्साह एवं धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रात: स्वामी जी के सानिध्य में आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने यज्ञ सम्पन्न कराया। महाशय हीरालाल जी ने इस मौके पर वानप्रस्थ दीक्षा प्राप्त की। स्वामी धर्ममुनिजी ने वानप्रस्थी जी को वस्त्र प्रदान कर आशीर्वाद प्रदान किया और उनका नाम परिवर्तित कर वा. हरीशमुनि जी रख दिया। आचार्य जी ने वानप्रस्थ जीवन पर पर्याप्त प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्रीओम् अहलावत जी द्वारा की गयी। विशिष्ट अतिथि श्री अजीतसिंह टीकरी कलां रहे। ब्रह्मशक्ति संजीवनी हास्पीटल बहादुरगढ के सौजन्य से नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का उद्घाटन चौधरी रतनसिहं प्रधान निजामपुर दिल्ली के कर कमलों द्वारा फीता काटकर किया गया। इस मौके पर सतीश जी छिक्कारा, डा राजेन्द्र शर्मा प्रबन्ध निदेशक ब्रह्मशक्ति संजीवनी हास्पीटल बहादुरगढ श्री दर्शन जी अग्निहोत्री श्री सत्यानन्दजी आर्य श्री सत्यपाल जी वत्स, वा. ईशमुनि जी श्री धर्मवीर जी आर्य श्री कर्तारसिहं जी आर्य श्री तेजपाल सिंह प्रधान टीकरीकलां आदि महानुभाव उपस्थित रहे मंच संचालन श्री राजवीर जी आर्य द्वारा कुशलता पूर्वक किया गया। शिविर 9बजे से 1बजे तक चला जिसमें कुशल चिकित्सकों टीम ने 250 रोगियों के स्वास्थ्य की जांच की। सभी को फ्री दवाईयां दी गयी और भोजन की व्यवस्था भी की गयी।

मध्याह्नोपरान्त 3 बजे पूज्य स्वामी जी के सानिध्य में आचार्य राजहंस जी मैत्रेय द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया गया वेदपाठ रवि शास्त्री द्वारा किया गया। श्रीमती विमल बुद्धिराजा धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा कीर्तिनगर ने अपने 64 वे जन्मदिवस पर यजमान आसन को सुशोभित किया। स्वामीजी ने यजमानों को सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिलाया। श्रद्धालुओं ने स्वामी जी को जन्मविस की बंधाईयां देते हुए पुष्पमालाओं और अपनी-2 भेंट प्रदान कर जोरदार स्वागत किया।

भजन संध्या कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी जी ने की। मुख्य अतिथि श्री नरेश जी कौशिक क्षेत्रीय विधायक रहे। श्री लक्ष्मण प्रसाद जी, पं रमेश चन्द्र जी, श्री.भगवान सिह, श्रीमती रामदुलारी बंसल तथा गुरूकुल लोवां कला की छात्राओं ने सुरीले भजनों द्वारा समा बांध दिया। इस अवसर पर आचार्य खुशीराम जी, महात्मा लालदास जी स्वामी रामानन्द जी, आर्य तपस्वी सुखदेव जी.श्री कन्हैयाललजी आर्य श्री जयदेव हसीजा आदि विद्वानों और संन्यासियों ने स्वामी धर्ममुनि जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए सुदीर्घायु की कामना की और उनके द्वारा किये जा रहे लोक कल्याण के कार्यों की सराहनीय प्रशंसा की। इसके तत्पश्चात् सुप्रसिद्ध गायिका कोकिला कंठ श्रीमती सुकृति माथुर एवं अविरल माथुर के सुमधुर भजनों का कार्यक्रम चला जिसने श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया और सभी ने उनके गायन की भूरि भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर पं जयभगवान जी आर्य श्री चन्द्रभान चौधरी विकासपुरी, श्री वीरेन्द्र जी दौलताबाद, कर्नल राजेन्द्र सहरावत राजेश जी राठी, श्री रमेश राठी श्री यशपालजी गांधी श्री राजपाल जी तथा अन्य क्षेत्रीय गणमान्य व्यक्तियों ने पधार कर स्वामीजी को बधाईयां दी और आशीर्वाद प्राप्त किया। स्वामी सविता नन्दजी ने अपना अध्यक्षीय आशीर्वाद दिया तत्पश्चात स्वामी धर्ममुनि जी सभी संन्यासियों, विद्वानो, दानियों तथा विभिन्न स्थानों से आये हुए श्रद्धालुओं का हार्दिक धन्यवाद किया तथा समारोह की सफलता पर सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन श्री राजवीर जी आर्य द्वारा किया गया। शान्ति पाठ के बाद स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था विक्रम देव शास्त्री रवि शास्त्री ब्र. कर्ण और अन्य छात्रों द्वारा की गयी जिसमें सभी ने भरपूर प्रसाद ग्रहण किया।

thearyasamaj.org

वेद सन्देश

अमरत्व की घोषणा!

- आचार्य अभयदेव

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय
आयुः प्रतरं दधानाः।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः
पूता भवत यज्ञियासः।।

-ऋ. १०।१८।२; अथर्व. १२।२।३०

ऋषिः-**सकुसको यामायनः।।** देवता-**मृत्युः।।** छन्दः-**त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ-हे मनुष्यो! **यदा**=जब तुम **मृत्योः पदं योपयन्तः**=मृत्यु के पैर को ढकेलते हुए **एत**=चलोगे, तो **द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः** =तुम दीर्घ विस्तृत आयु को धारण करनेवाले तथा **प्रजया धनेन आप्यायमानाः**=प्रजा और धन से परितृप्त होओगे। इसके लिए **शुद्धाः**= बाहर से शुद्ध **पूताः**=अन्दर से पवित्र और **यज्ञियासः**=यज्ञिय जीवनवाले **भवत**=हो जाओ।

विनय- संसार के हरेक प्राणी पर मृत्यु ने पाँव रखा हुआ है। जिस दिन उसकी इच्छा होती है उस दिन वह उस पाँव को दबाकर प्राणी को कुचल डालती है, समाप्त कर देती है, पर हे नरतनधारी मनुष्यो! तुममें वह शक्ति है जिससे कि तुम मृत्यु के उस पैर को ढकेल कर अमर बन सकते हो। इस संसार में तुम मरे हुओं की तरह न रहकर, न सड़कर, अमर पुत्रों की तरह दृढ़ता से चलो; शुद्ध, पूत और यज्ञय बन जाओ। ऐसे बनने से तुममें वह आत्मशक्ति जग जाएगी कि तुम उस मृत्यु के पैर को ढकेल फेंकोगे। ठीक आहार, व्यायाम, तप आदि द्वारा शरीर को शुद्ध रखो और अन्दर सत्त्वशुद्धि, सौमनस्य आदि लाकर अन्तःकरण को पवित्र रखो; और फिर इस शरीर और मन से यज्ञय कर्म ही करते जाओ; इससे तुम निःसन्देह अमर निकल जाओगे। यह सच है कि यज्ञिय जीवन से मृत्यु मारी जाती है, तब मनुष्य की आयु सौ वर्ष तक चलने वाला यज्ञ हो जाता है, तब वह मनुष्य पूर्ण सौ वर्ष की दीर्घ विस्तृत आयु को यज्ञरूप में धारण करता है। हम मरे हुए मनुष्य तो आयु को 'धारण' नहीं कर रहे हैं, किन्तु आयु के एक बोझ को जैसे-तैसे ढो रहे हैं। जब शरीर को आत्मा धारे हुए होता है तो आत्मा शरीर को पूर्ण सौ वर्ष तक स्वस्थ चलने की-जीवन-यज्ञ की सौ वर्ष तक अखण्डित चलने की-आज्ञा देता है और इस जीवन में प्रजा को सृजने द्वारा तथा धन के बढ़ाने द्वारा अपनी विकास की इच्छा को परितृप्त करके यज्ञ को पूर्ण करता है। आत्मशक्ति का प्रकाश करने के लिए ही आत्मा शरीर को धारण करता है, अतः शरीर पाकर इस जगत् में कुछ-न-कुछ उपयोगी वस्तु का प्रजनन करना, सृजन (Create) करना तथा जगत् के सच्चे ऐश्वर्य को (धन को) बढ़ा जाना आवश्यक है। संसार में आई सब महान् आत्माएँ इस संसार में कुछ-न-कुछ जगत्-हितकारी वस्तु का सृजन करके तथा जगत् में किसी उच्च-से-उच्च ऐश्वर्य को बढ़ाकर जाती हैं। हे मनुष्यो! उठो, मृत्युमय जीवन छोड़ो, शुद्ध पूत और यज्ञिय बनो और मृत्यु के पैर को परे हटाकर अपने अमरत्व की घोषणा कर दो।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

मौन का स्वरूप

एक बार एक विद्वान् को कुछ लोगो ने जीवन को उच्चतर बनाने के लिए उपदेश-प्रवचन हेतु अपने नगर मे आमंत्रित किया। नगर के किसी विशाल प्रांगण में श्रोताओं के प्रवचन सुनने की सुन्दर व्यवस्था की गई। विद्वान् के लिए एक ऊंचा मंच बनाया गया। प्रवचन सुनने के लिए नगर से हजारों लोग घंटो पहले एकत्रित हो गए और प्रवक्ता विद्वान् की आने की प्रतीक्षा कर ही रहे थे कि अचानक वो विद्वान् आये और मंच पर बैठ गए। उन्होंने श्रोताओं से पूछा क्या आप लोग जानते हैं कि मैं किस विषय पर प्रवचन करूंगा? श्रोताओं ने कहा हमें नही पता, आप किस विषय पर बोलोगे? तो उस विद्वान् ने कहा यदि तुम यह नहीं जानते कि मैं किस विषय पर बोलूंगा तो तुम उस विषय को जो मैं बोलूंगा उसे समझोगे कैसे और वह मंच से उतरा और चला गया। लोग आश्चर्य चकित होकर देखते रह गए। लोगो ने विचार किया कि आज का दिन यूं ही बेकार गया। कल के लिए उनसे पुन: प्रार्थना करेगें और उनके पूछने पर हम सभी को एक ही उत्तर देना है कि जिस विषय पर आप बोलना चाहते हैं वो हम सभी जानते हैं ऐसा निश्चित करके अगले दिन फिर आ गए। दूसरे दिन वो विद्वान् प्रवचन के लिए मंच पर फिर आये और उन्होंने श्रोताओं से फिर पूछा क्या तुम उस विषय में जानते हो जिस विषय पर मैं बोलना चाहता हूं? तो श्रोताओं ने खड़े होकर कहा, हां जी हम जानते हैं कि आप किस विषय पर बोलना चाहते हैं? तो उस विद्वान् ने कहा यदि तुम उस विषय को जानते ही हो जिस विषय पर मैं बोलना चाहता हूं तो मुझे कहने की क्या आवश्यकता है? ऐसा कहकर वह मंच से उतरा और पुन: चला गया। लोगो को फिर आश्चर्य हुआ और कहने लगे कि आज का दिन भी व्यर्थ ही चला गया। फिर लोगो ने आपस में विचार विमर्श करके यह निश्चय किया कि आधे लोग तो ये कहें कि हम जानते हैं और आधे लोग ये कहें कि हम नही जानते और चलकर फिर से कल के लिए पुन: उनसे प्रार्थना करते हैं। अगले दिन फिर वह विद्वान् आये पुन: लोगो से वही प्रश्न पूछा तो आधे लोगो ने कहा, हां जी हम जानते हैं और आधे लोगो ने कहा कि हम नहीं जानते तो उस विद्वान् ने कहा जो नही जानते हैं वे उनसे पूछ लें जो जानते हैं और जानने वाले उन्हें बता दें। फिर बोलने की मेरी क्या आवश्यकता है? ऐसा कहकर वह मंच से उतरा और चला गया। यह देखकर लोग दंग रह गए और सोचने लगे कि हमारा तीसरा दिन भी यूं ही व्यर्थ चला गया। अब लोगो के पास आगे कोई विकल्प नही बचा। अब क्या किया जाए इसी चिन्ता में लोग लगे हुए हैं। सामान्यत: लोगो के पास में तीन ही उपाय होते हैं। चौथे उपाय को कोई विशेष महापुरुष ही जानता है। और वह उपाय है मौन। अब उन लोगों को मौन हो जाने की आवश्यकता है परन्तु सामान्य लोगों को मौन का कोई अनुभव नही इसलिए उनके पास में मौन का विकल्प ही नही है। कहानी कहती है कि लोग इन तीन विकल्पों के बीच ही जीते हैं। वे जानते हैं, वे नही जानते हैं, और जानते भी हैं नही भी जानते हैं। यदि वे जानते हैं तो सुनिश्चित रूप से उन्हें जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि वे नहीं जानते हैं तो वे उसे कैसे जानेगें क्योंकि जानने के लिए पूर्व जानकारी की आवश्यकता होती है अब तीसरा विकल्प है कि विषय के सम्बन्ध में जानते हैं, विषय क्या है इसे नही जानते तो ये विकल्प विरोधाभाषी प्रतीत होता है परन्तु यह ऐसी स्थिति है जहां जानना और न जानना दोनो ही नही बन पाते, जानने वाला उपस्थित होता है परन्तु वह जानता कुछ नहीं। तब चौथ विकल्प बचता है परम मौन । उसे कोई विरले ही जानता है वह मौन विचार और भावातीत है इसकी अनुभूति जिसे होती है वही इसका स्वाद जानता है और दूसरा कोई नहीं। कहानी का संकेत है कि वह विद्वान् परम मौन की अनुभूति के सम्बन्ध मे कहना चाहता था परन्तु लोगों को उसका कोई अनुभव नहीं था इसलिए चौथे दिन लोगों के पास कोई विकल्प नहीं था। चौथे विकल्प के सम्बन्ध में जानना पर्याप्त नही, उसकी अनुभूति ही जीवन को सार्थक करती है और मनुष्य संसार में विषय को जानने के लिए नही आया अपितु जानने वाले को जानने के लिए आया है। वह केवल विभिन्न विषयों को ही जानता है स्वयं को नहीं जानता। उसका जीवन लौकिक रूप से तो सार्थक है परन्तु आत्मिक रूप से सार्थक नहीं और जिसका जीवन आत्मिक रूप से सार्थक नहीं उसका जीवन पूर्णतया सफल नहीं माना सकता क्योंकि मानव का उद्देश्य केवल लौकिक जीवन को जानना ही नहीं अपितु जीवन के अन्तिम उद्देश्य तक पहुंचना है इसलिए चौथे विकल्प मौन तक पहुंचना है जहां हमारी इच्छा के बिना मन कोई कार्य नहीं करता। जो लोग केवल सांसारिक पदार्थो को जानने के लिए लगे हैं और यही मानते हैं कि हम जानते हैं तो वे केवल साधनों का ही ज्ञान रखते हैं जो आवश्यक होते हुए भी पर्याप्त नहीं। अत: हमें परम मौन को भी जानना चाहिए जो विचार और समस्त भावनाओं के पार है। उसी में मानव परम विश्रान्ति को उपलब्ध होता हैऔर इस अवस्था में ही मानव आत्मबोध या आत्म साक्षात्कार को प्राप्त होता है।

- राजहंस मैत्रेय

thearyasamaj.org

निर्विचार समाधि में उपलब्ध होता है आध्यात्मिक प्रसाद

–राजहंस मैत्रेय, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

निर्विचार समाधि में क्या मिलता है और आगे कहां तक पहुँचाती है और इसका अंतिम परिणाम क्या है? इसी विषय को यहां वर्णित किया जा रहा है–

सूक्ष्म विषयत्वं चालिङ्ग पर्यवासनम् (४५)

पदार्थ–सूक्ष्य विषयत्वम् च=और सूक्ष्म विषयों को ध्येय बनाने वाली समाधि, **अलिङ्गपर्यवसानम्**=चिह्न रहित मूल प्रकृति तक साक्षात्कार कराती है। अर्थात् बाह्य सूक्ष्म विषयों को ध्येय बनाकर समाधि में मूल प्रकृति का ज्ञान हो जाता है। व्यक्ति का जानने का स्वभाव है यह अमुक वस्तु क्यों-कैसे-कैसी है? यह प्रश्न प्रायः सभी के अन्दर उभरकर आता है और जानना स्थूल से लेकर सूक्ष्म तक पांच विषय वाला है। इस जानने की शृंखला में मूल प्रकृति तक ही जाना जा सकता है क्योंकि मूल प्रकृति ही अंतिम है। इससे आगे इसकी सूक्ष्मता नहीं है। इसलिए स्थूल से सूक्ष्म की ओर पांच स्थूल भूत, पांच तन्मात्राएं, इन्द्रियां, अहंकार, महत्वत्व और मूल प्रकृति को ध्येय बनाकर समाधि में उतरा जाता है, तो इन्हीं विषयों का साक्षात्कार हो जाता है। यह आवश्यक नहीं कि सभी साधकों को इन सभी सूक्ष्म विषयों का ज्ञान हो जायेगा। यह तो केवल उन्हीं साधकों को हो पायेगा जो इन विषयों को ध्येय बनाकर साक्षात्कार करना चाहेंगे। अन्यथा तो साधक बिना किसी सूक्ष्म विषयों को ध्येय बनाकर भी साधना कर सकता है। वह विषयों के प्रति तटस्थ हुआ निर्विषय होकर साधना करता हुआ आत्मसाक्षात्कार तक पहुंच जाता है और अन्ततः उस प्रभु का भी साक्षात्कार करता है जिसके लिए वह चिरकाल से प्रतीक्षारत है। सूक्ष्म विषयों का साक्षात्कार करता हुआ भी मूल प्रकृति के बाद मानव स्वयं को पृथक करता है क्योंकि मूल प्रकृति पर्यन्त विषयों के साक्षात्कार से आत्म तृप्ति नहीं होती। अन्ततः साधक स्वयं को ही विषय बनाता है और स्वयं के अन्दर ही उस प्रभु को पाता है जिसके लिए वह इस जगत में जन्म जन्मान्तरों से यात्रारत है। अब शंका होती है कि मूल प्रकृति तक की समाधि क्या अंतिम है। इसी विषय को स्पष्ट करने के लिए अगले सूत्र की रचना की गई है–

ता एव सबीजः समाधिः॥४६॥

पदार्थ–ता एव=वह मूल प्रकृति पर्यन्त समाधि तो, **सबीजः**=बीज वाली, **समाधिः**=समाधि है। अर्थात् लौकिक विषयों वाली समाधि तो सबीज समाधि है। साधना के काल में योगी तरह-तरह के अनुभवों से गुजरता है और वे सारे अनुभव बाह्य विषयों वाले ही होते हैं, जैसे प्रकाश, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द। जब ये ही विचित्र अनुभव हों तो समझ लेना अभी किसी बाह्य विषयों पर ही आश्रित हैं। क्योंकि दो ही वस्तुओं का बोध है–एक तो द्रष्टा जो देखने वाला है और दूसरा दृश्य जो दीखने वाला है। द्रष्टा और दृश्य दोनों ही सत्तात्मक रूप से भिन्न होते हैं। इसलिए आत्मा जब तक अपने से भिन्न किसी स्थूल व सूक्ष्म पदार्थ का अनुभव करती है तो समझ लेना चाहिए कि अभी सबीज समाधि है। क्योंकि समाधि अवस्था में जब तक आलम्बन शेष है अथवा विषय वस्तु के सम्बन्ध में चिन्तन मनन है, तब तक सबीज समाधि होती है। सबीज समाधि में साधक के साथ बन्धन के बीज बने रहते हैं। कोई अचानक प्रकृति का तीव्र लोभ सामने आ जाये तो फिर वह आत्मा को आकर्षित कर लेता है। अनेक जन्मों के संस्कार हमारे अन्तःकरण में उपस्थित रहते हैं और वे ही बार-बार उभरकर सामने आ जाते हैं। इसलिए जब तक समाधि में प्राकृतिक वस्तुएं ही अनुभव में आती हैं तो सबीज समाधि ही कहलाती है। आलम्बन रहित हुआ जब योगी केवल स्वरूप में ही स्थित रहता है, अपने से भिन्न किसी अन्य वस्तु को नहीं देखता है तो वही योगी प्रभु को अपने अन्दर ही उपलबध होकर कृत कृत्य हो जाता है। योगी को निरन्तर अभ्यास करते हुए जब निर्विचार समाधि परिपक्व होती है तो योगी को प्राप्त होता है अध्यात्मप्रसाद। इसी भावना को स्पष्ट करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है–

निर्विचार वैशारद्येऽध्यात्मप्रसादः॥४७॥

पदार्थ–निर्विचार=निर्विचारसमाधि की, **वैशारद्ये**=

thearyasamaj.org

परमशुद्धता हो जाने पर, **अध्यात्मप्रसादः**=आध्यात्मिक प्रसाद प्राप्त होता है। जब कोई साधक योगाभ्यास करता हुआ निर्विचार अवस्था में पहुंचता है तो उसे आध्यात्मिक प्रसाद मिल जाता है। प्रसाद शब्द का अर्थ है वह आन्तरिक प्रसन्नता जिसे व्यक्ति पाकर धन्यता से भर जाता है। क्योंकि वहां एक ऐसी शान्ति का अनुभव होता है जहां निर्विचार का भी विचार नहीं रह जाता, जहां किसी तरह का कोई विचार न हो वहां परम मौन ही आनन्द पूर्ण होता है। प्राय: हम विषय के साथ होते हैं। इसलिए विषय सम्बन्धी दु:ख भी उत्पन्न हो जाता है और आकांक्षा के साथ दु:खी मन बना रहता है। मांग व शिकायती मन के साथ चित्त में नर्क बना रहता है। अकस्मात् जब विषय विलीन हो जाते हैं तो नर्क भी विदा हो जाता है और फिर होती है स्वर्ग की वर्षा। इसे ही अध्यात्म प्रसाद कहते हैं। हमें तो बस ऐसा ही लगता है कि प्रभु की कृपा हो गई और हमने इसके लिए कुछ भी नहीं किया और जब इस अध्यात्म प्रसाद को पाने की चेष्टा करते हैं तो मिलता नहीं। इसलिए यह तो प्रभु की कृपा से ही मिलता है। उस अवस्था में हम पूर्णतया चेष्टा रहित और बोद्धा बने रहते हैं। हमें वहां कुछ भी नहीं करना पड़ता। सत्य तो यह है कि जिस तरीके से हम उसे पाने की चेष्टा करते हैं वही चेष्टा बाधा बन जाती है। हमें किसी तेज गति की आवश्यकता नहीं और कहीं जाने की भी आवश्यकता नहीं। यदि आवश्यकता है तो केवल विषयों के प्रति तटस्थ होकर पूर्णतया सचेत होकर मौन हो जाने की। यदि यह हो जाता है तो फिर आध्यात्मिक प्रसाद हमारे ऊपर अनायास ही बरस उठता है।

अब निर्विचार की निर्मलता में आध्यात्मिक प्रसाद की प्राप्ति पर ऋतबुद्धि प्रज्ञा में रूपांतरित हो जाती है। इसी विषय को इस सूत्र में वर्णित किया गया है।

ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा॥४८॥

पदार्थ—ऋतम्भरा=सत्यता को धारण करने वाली बुद्धि, **तत्र**—निर्विचार समाधि की निरन्तरता में, **प्रज्ञा**=प्रज्ञा में परिवर्तित हो जाती है। अर्थात् सत्य को धारण करने वाली बुद्धि निर्विचार समाधि की प्रक्रिया से प्रवाहित होकर प्रज्ञा में रूपान्तरित हो जाती है, जो केवल जगत के सत्यों को जानती है। उसमें भ्रम की संभावना नहीं होती। ऋत शब्द का अर्थ है सत्य, ऐसा सत्य जो जगत् की व्यवस्था को बनाता हो, अर्थात् जिन नियम व सिद्धान्तों से जगत् चलता हो उस सम्पूर्ण व्यवस्था का नाम ही ऋत् है। उसी ऋत् को जो बुद्धि धारण करती है, उसी का नाम ऋतम्भरा है। निर्विचार समाधि में अध्यात्म प्रसाद के बाद वही ऋतम्भरा प्रज्ञा से विभूषित हो जाती है। वह प्रज्ञा यथार्थ को धारण करती है। जो जैसा तत्व है, उसको उसी रूप में प्रज्ञा द्वारा जाना जा सकता है। प्रजा के जागरण में दूरदर्शिता पर्याप्त होती है। उसके द्वारा ही सत्य से असत्य (भ्रम) अलग कर दिया जाता है। फिर वहां कोई द्वन्द्व नहीं, सम्पूर्ण स्वीकृति है। फिर वहां सभी अपनी-अपनी भूमिका निभाते हुए नजर आते हैं और वे सब सृष्टि प्रक्रिया की पूर्ति करते हुए दिखाई देते हैं। प्रज्ञा के जागने पर ही सभी विपरीततायें सृष्टि प्रक्रिया की समस्वरीय घटनायें बन जाती हैं। वे सब एक दूसरे की पूरक हो जाती हैं। वहां हमें कोई शिकायत नहीं रहती। वहां इतने प्रबुद्ध हो जाते हैं कि विपरीत घटनाएं दीखने वाली अत्यन्त आवश्यक दिखाई देने लग जाती हैं और उसी प्रज्ञा के कारण द्वन्द्वात्मक दु:ख पूर्णतया विलीन हो जाता है।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूरभाष : 01276-230195 **चलभाष** : 09416054195

thearyasamaj.org

यज्ञ क्यों करें? यजुर्वेद

- शिव नारायण उपाध्याय

यजुर्वेद कर्म काण्ड का वेद है। विविध यज्ञों में इसी वेद के मंत्रों से आहुति दी जाती है। प्रथम अध्याय मंत्र 2 में ही यज्ञ की चर्चा है।

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वानो धर्मोऽसि विश्वधाऽसि परमेण धाम्ना दृꣳहस्य मा ह्वर्मा ते यज्ञपति ह्वार्षीत्। यजु. 1.2.

स्वामी दयानन्द इसके भावार्थ में लिखते हैं, 'मनुष्य लोग अपनी विद्या और उत्तम क्रिया से जिस यज्ञ का सेवन करते हैं, उससे पवित्रता का प्रकाश, पृथ्वी का राज्य, वायुरूपी प्राण के तुल्य राजनीति, प्रताप, सबकी रक्षा, इस लोक और परलोक में सुख की वृद्धि, परस्पर कोमलता से वर्तना और कुटिलता का त्याग इत्यादि श्रेष्ठ गुण उत्पन्न होते हैं इसलिए सब मनुष्यों को परोपकार तथा अपने सुख के लिए विद्या और पुरुषार्थ के साथ प्रीतिपूर्वक यज्ञ का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए।

इस एक मंत्र के भावार्थ में ही स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यज्ञ से होने वाले कितने ही लाभों के विषय में बता दिया है।

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्र धारम्।
देवस्त्वासविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेणसुप्वाकामधुक्षः। यजुर्वेद 1.3.

पदार्थ- जो (**वसोः**) यज्ञ (**शतधारम्**) असंख्यात संसार का धारण करने और (**पवित्रम्**) शुद्धि करने वाला कर्म (**असि**) है। जो (**वसोः**) यज्ञ (**सहस्त्रधारम्**) अनेक प्रकार के ब्रह्माण्ड को धारण करने और (**पवित्रम्**) शुद्धि का निमित्त सुख देने वाला (**असि**) है। (**त्वा**) उस यज्ञ को (**देवः**) स्वयं प्रकाश स्वरूप (**सविता**) वसु आदि तैंतीस देवों का उत्पत्ति करने वाला परमेश्वर (**पुनातु**) पवित्र करे। हे जगदीश्वर! आप हम लोगों से सेवित जो (**वसो**) यज्ञ है (**पवित्रेण**) शुद्धि के निमित्त वेद के विज्ञान (**शतधारेण**) बहुत विद्याओं का धारण करने वाले वेद और (**सुप्वा**) अच्छी प्रकार पवित्र करने वाले या से हम लोगों को पवित्र कीजिये। हे विद्वान् पुरुष। तू (काम) वेद की श्रेष्ठ वाणियों में से किस किस वाणी के अभिप्राय को (अधुक्षः) अपने मन में पूर्ण करना चाहता है। फिर यज्ञ से होने वाले लाभ पर मंत्र संख्या 12 में कहा गया है-

पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाभ्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिमभिः। देवीरापोऽ अग्रेगुवोऽअग्रेपुवोऽग्रऽइममद्ययज्ञं नयताग्रे यज्ञपतिꣳसुधातुं यज्ञपति देवयुवम्। यजु. 1.12

भावार्थ-इस मंत्र में लुप्तोपमालंकार है। जो पदार्थ संयोग से विकार को प्राप्त होते हैं वे अग्नि के निमित्त से अति सूक्ष्म परमाणु रूप होकर वायु के बीच रहा करते हैं और कुछ शुद्ध भी हो जाते हैं परन्तु जैसी यज्ञ के अनुष्ठान से वायु और सृष्टि जल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि होती है वैसी दूसरे उपाय से कभी नहीं हो सकती इससे विद्वानों को चाहिए कि अच्छी अच्छी सामग्री बना कर अनेक प्रकार से लाभ उठावें।

फिर पन्द्रहवें मंत्र के भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं, 'जब मनुष्य वेदादि शास्त्रों के द्वारा यज्ञ क्रिया और उसका फल जानकर शुद्धि और उत्तमता के साथ यज्ञ को करते हैं तब वह सुगन्धि आदि पदार्थों के होम द्वारा परमाणु अर्थात् अति सूक्ष्म होकर वायु और वृष्टि जल में विस्तृत हुआ सब पदार्थों को उत्तम कर के दिव्य सुखों को उत्पन्न करता है। जो मनुष्य सब प्राणियों के सुख के अर्थ पूर्वोक्त तीन प्रकार के यज्ञ को नित्य करता है उसको सब मनुष्य यज्ञ का विस्तार करने वाला उत्तम मनुष्य है ऐसा वारम्वार कहकर सम्मान करें।

यजुर्वेद अध्याय दो मंत्र संख्या दो में कहा गया है-हे मनुष्यों। तुमको वेद आदि यज्ञ के साधनों का सम्पादन करके सब प्राणियों के सुख तथा परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए अच्छी प्रकार क्रिया युक्त यज्ञ करना और सदा सत्य ही बोलना चाहिए। तुम लोगों को भी मेरे (ईश्वर के) समान पक्षपात छोड़कर सब प्राणियों के पालन से सुख सम्पादन करना चाहिए।

यजुर्वेद अध्याय दो मंत्र संख्या सौलह में यह

thearyasamaj.org

बताया गया है कि यज्ञ की क्रिया का वायु मण्डल पर क्या प्रभाव होता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती इस मंत्र की भूमिका में लिखते हैं-इस मंत्र में लुप्तोपमालंकार है। मनुष्य लोग यज्ञ में जो आहुति देते हैं वह वायु के साथ मेघ मण्डल में जाकर सूर्य से खिंचे हुए जल को शुद्ध करती है फिर वहाँ से वह जल पृथ्वी पर आकर औषधियों को पुष्ट करता है। वह उक्त आहुति वेद मन्त्रों से ही करनी चाहिए क्योंकि उसके फल को जानने से श्रद्धा उत्पन्न होवे।'

कस्त्वा विमुञ्चति सत्वा विमुञ्चति कस्मै त्वा विमुञ्चति तस्मै त्वा विमुञ्चति।
पोषाय रक्षसा भागोसि। यजु.2.23.

पदार्थ- **(कः)** कौन सुख चाहने वाला यज्ञ का अनुष्ठाता पुरुष **(त्वा)** उस यज्ञ को **(विमुञ्चति)** छोड़ता है अर्थात् कोई नहीं। और जो कोई यज्ञ को छोड़ता है **(त्वा)** उसको **(सः)** यज्ञ का पालन करने वाला परमेश्वर भी **(विमुञ्चति)** छोड़ देता है। जो यज्ञ को करने वाला मनुष्य पदार्थ समूह को यज्ञ में छोड़ता है **(त्वा)** उसको **(कस्मै)** किस प्रयोजन के लिए अग्नि के बीच में **(विमुञ्चति)** छोड़ता है **(तस्मै)** जिससे सबको सुख प्राप्त हो तथा **(पोषाय)** पुष्टि आदि गुण के लिए **(त्वा)** उस पदार्थ समूह को **(विमुञ्चति)** छोड़ता है। जो पदार्थ सब के उपकार के लिए यज्ञ के बीच में नहीं मुक्त किया जाता वह **(रक्षसाम्)** दुष्ट प्राणियों का **(भागः)** अंश **(असि)** होता है।

यजुर्वेद अध्याय तीन मन्त्र पहला के भावार्थ में स्वामी दयानन्द लिखते हैं। जैसे गृहस्थ मनुष्य आसन, अन्न, जल, वस्त्र और प्रियवचन आदि से उत्तम गुण वाले संन्यासी आदि को सेवन करते हैं वैसे ही विद्वान लोगों को यज्ञ, वेदी, कला यंत्र और यानों में स्थापन कर यथा योग्य इन्धन, घी, जलादि से अग्नि को प्रज्वलित करके वायु, वर्षा जल की वृद्धि अथवा यानों की रचना नित्य करनी चाहिए।

स्वामी जी चाहते हैं कि मनुष्य विमानादि बनाना भी सीखें। यज्ञ का बड़ा लाभ वृष्टि का ठीक से होना भी है इसे यजुर्वेद अध्याय 23 मंत्र संख्या बारह में बताया गया है।

द्यौरसीत्पूर्व चित्तिरश्वऽआसीद् बृहद्वयः।
अदिरासीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिला।

भावार्थ- हवन और सूर्य रूपादि अग्नि के ताप से सब गुणों से युक्त अन्नादि से संसार की स्थिति करने वाली वर्षा होती है। उस वर्षा से सब औषधि आदि उत्तम पदार्थ युक्त पृथ्वी होती और सूर्य रूप अग्नि से ही प्राणियों के विश्राम के लिए रात्रि होती है।

यज्ञ में पशु की बलि देने की प्रक्रिया का यजुर्वेद समर्थन नही करता है। यजुर्वेद अध्याय 23 मंत्र संख्या 17 में इस विषय में नाना प्रकार से इस विषय पर कहा गया है-

अग्निः पशुरासीत्तेनायजन्त सऽएतं
लोकमजयद्यस्मिन्नग्निः
स ते लोको भविष्यत्ति तं जेष्यसि पिबैताऽअपः।

पदार्थ-हे विद्या बोध चाहने वाले पुरुष **(अस्मिन्)** जिस देखने योग्य लोक में **(सः)** वह **(अग्निः)** अग्नि **(पशुः)** देखने योग्य **(आसीत्)** है **(तेन)** उस से जिस प्रकार यज्ञ करने वाले **(अजयन्त)** यज्ञ करें उस प्रकार से तू यज्ञ कर जैसे **(सः)** वह विद्वान **(एतम्)** इस **(लोकम्)** देखने योग्य स्थान को **(अजयत्)** जीतता है वैसे इसको जीत यदि **(तत्)** उसको **(जैष्यसि)** जीतेगा तो वह **(अग्निः)** अग्नि **(ते)** तेरा **(लोकः)** देखने योग्य **(भविष्यसि)** होगा इससे तू **(एता)** इस यज्ञ से शुद्ध किये हुए **(अपः)** जलों को **(पिब)** पी। इस मंत्र में अग्नि को ही पशु कहा गया है। वैसे ही यज्ञ को हिंसा रहित कहा जाता है। इति। - 73, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)

साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

thearyasamaj.org

मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

-राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

दूसरी तरफ हनुमान द्वारा लंका में बहुत से राक्षसों के मारने, बाग उजाड़ने, सीता से मुलाकात करने व फिर पकड़े जाने पर बंधन तोड़कर सुरक्षित निकल जाने के पश्चात लज्जित हुए रावण ने अपने मन्त्रीमण्डल की बैठक बुलाकर कहा "हे महाबली राक्षसों मननशील पुरुष कहते हैं कि विजय का मूलमन्त्र सम्मति से कार्य करना है। इसीलिए राम के विषय में सम्मति करना ही उचित प्रतीत होता है। हे वीरों लोक में उत्तम, मध्यम तथा अधम तीन प्रकार के पुरुष होते हैं। जो पुरुष हितकारी मन्त्रियों, मित्रों व बन्धुओं से सम्मति करके तथा परमात्मा को स्मरण करते हुए यत्न करता है वह उत्तम पुरुष होता है। जो अकेला ही विचार करता है और धर्म में आस्था रखता है और अपना कार्य भी अकेला करता है उसे मध्यम कोटि का पुरुष कहा जाता है। जो बिना गुण दोष विचारे अपेक्षा बुद्धि से कार्य करता है उसे अधम पुरुष कहा जाता है। इसीलिए आप सब श्रेष्ठ बुद्धिमान पुरुष मुझको उत्तम सम्मति दें क्योंकि बहुत से धीर वानरों की सेना से घिरा हुआ राम लंका को पाने के उद्देश्य से आ रहा है। इसमें कोई सन्देह नहीं रहा कि राम अपने भाई और वानर सेना सहित समुद्र पार हो जायेगा। रावण के इस प्रकार के वचन सुनकर महाबली राक्षस हाथ जोड़कर बोले "हे राजन्! आप उदास न हों। आप अपने बल से नाग और यक्षों को हराकर हिमालय से विमान भी लाये हैं। हे महाभाग! शूरवीर बड़े बलवान वरूण राजा जिसके पास चतुरंगिनी सेना थी उसको भी आपने रण में विजयी किया है फिर राम तो उनके तुल्य नहीं जिनको आपने युद्ध में जीता है। आपकी तो बात ही अलग है, यह अकेला इन्द्रजीत ही सारे वानरों को मार गिरायेगा।" इन राक्षसों द्वारा सम्मति दिए जाने के पश्चात विभीषण खड़ा हुआ और उन सभी को शान्त करता हुआ रावण से बोला "हे तात्! हनुमान का समुद्र को लांघकर आना और सकुशल वापिस जाने को कौन इस लोक में जानता था? फिर उस बलवान तथा धर्म अनुयायी राम से निरर्थक बैर करना ठीक नहीं। इसीलिए उसको सीता वापिस लौटा देना उचित है।"

विभीषण के वचन सुनकर रावण बिना कुछ कहे अपने महल में चला गया। दूसरे दिन प्रभात समय बड़े कर्मो वाला तेजस्वी विभीषण अपने बड़े भाई रावण के महल गया और फिर अपने वचनों को दोहराया। इन हितकारी वचनों को सुनकर रावण ने क्रोधित होकर उत्तर दिया "मुझे किसी का भय नहीं हे। राम सीता को कभी प्राप्त नहीं कर सकेगा। जहाँ तक युद्ध का प्रश्न है राम मेरे सामने खड़ा भी नहीं हो सकता।" इसके पश्चात रावण ने राज्यसभा तथा मन्त्रियों से विचार विमर्श किया और सभा में बैठकर आज्ञा दी कि अन्य प्रसिद्ध-प्रसिद्ध राक्षसों को भी यहाँ शीघ्र बुलवाओ। रावण की आज्ञा पाते ही सभी महाबली राक्षस योद्धा दोडे-दौड़े आये और रावण को अभिवादन करके अपने-अपने स्थान पर बैठ गए तदन्तर विभीषण भी सुवर्ण से चित्रित तथा उत्तम घोड़ों वाले शुभरथ पर चढ़कर भाई की सभा में आया और रावण को अभिवादन करके वह भी अपने आसन पर बैठ गया। सभी के बैठने के पश्चात रावण ने अपने सेनापति प्रहस्त को आज्ञा दी "हे सेनापति! पैदल, घुड़सवार व हाथी सवार सभी सुशिक्षित योद्धाओं को नगर की रक्षा के लिए तत्पर कर दो" और प्रहस्त को सम्बोधित करते हुए फिर कहा कि "आप सभी दु:ख, सुख, लाभ, हानि, हित और अहित में सदैव मेरे साथ रहे। अब मेरी आज्ञा है कि सीता को देना नहीं और दशरथ के दोनों पुत्रों का हनन करता है।" उसी समय रावण को काम के वशीभूत होता हुआ देख उसका भाई कुम्भकर्ण क्रोधित होकर यह वचन बोला "हे महाराज! आपको कार्य करने की सम्मति आरम्भ में ही करनी चाहिए। लेकिन आप पर तो काम का भूत सवार है इसीलिए सब कार्य उल्टे ही किए जा रहे हो। हे महाराज! आपने बिना सोचे समझे इतना बड़ा निर्णय

thearyasamaj.org

ले लिया लेकिन मैं आपके शत्रुओं को मारकर इस कार्य को ठीक करूँगा।'' कुम्भकर्ण द्वारा झिड़के जाने पर रावण को बहुत क्रोध आया। लेकिन रावण का ही एक महाबली, महापार्श्व नाम का योद्धा बीच में ही बोल पड़ा कि ''हे राजन्! महाबली कुम्भकर्ण व इन्द्रजीत दोनों अकेल ही किसी भी बड़े संकट को दूर करने में सक्षम है इसमें कोई संशय नहीं।'' महापार्श्व के वचन सुनकर और उसके वाक्यों का सत्कार करता हुआ रावण बोला कि ''रण में मैं राम की सेना का इस प्रकार नाश कर दूँगा जैसे सूर्य, तारे आदि नक्षत्रों का नाश कर देता है।'' राक्षसेन्द्र रावण के इन वाक्यों को सुनकर विभीषण ने फिर अपनी सम्मति दी कि ''हे राजन्! आपने सीता रूपी विषैले साँप को पकड़ा हुआ है। जिसके विष के प्रभाव से न तो कुम्भकर्ण, मेघनाद, महापार्श्व, महोदर, निकुंभ और ना ही अतिकाय बच सकेगा और इसका परिणाम यह होगा कि चाहे स्वयं इन्द्र आकर तुम्हारी रक्षा करे लेकिन तुम भी राम के तीक्ष्ण बाणों से नहीं बच सकोगे।'' फिर विभीषण ने सभी मन्त्रियों की ओर संकेत करते हुए कहा कि ''जो शत्रुओं का बल, अपना बल और देश काल व वृद्धि ये सब बातें बुद्धि से सोचकर स्वामी के हित के लिए नहीं बोलता वह मित्र रूप में शत्रु ही माना जाता है।'' बृहस्पति के तुल्य मति वाले विभीषण के वचन सुनकर राक्षस समूह का मुख्य सेनापति इन्द्रजीत बोला ''हे छोटे तात्! मेघनाद के वाक्य सुनकर विभीषण बोला ''हे मेघनाद तू बाल बुद्धि होने के कारण तेरे अन्दर अभी विचार शक्ति नहीं है। इसीलिए तू लाभ हानि के अर्थ कुछ नहीं जानता है। तू और तेरे सहित जिन मन्त्रियों ने राम से युद्ध करने की सम्मति दी है तुम सभी वध योग्य हो। फिर विभीषण रावण से बोला ''हे राजन्! हमको बहुत से भूषण और दिव्य वस्त्र दे करके इस देवी सीता को राम को दे देना चाहिए।'' विभीषण के हितकर वचन सुनने के पश्चात काल से प्रेरित हुआ रावण यह कठोर वाक्य बोला कि ''क्रुद्ध हुए नाग के साथ वास करना श्रेष्ठ है पर अपने शत्रुओं का हित चाहने वाले मित्र के साथ नहीं। हे सौम्य! तुझे मेरा लोक में आदर पाना, ऐश्वर्य पूर्ण होना और शत्रुओं को नष्ट करने की योग्यता अच्छी नहीं लगती है। जैसे अनार्य पुरुष में सौहार्द नहीं टिकता। हे निशाचर! अगर तेरे जैसा वाक्य कोई और कहता तो अभी तक जीवित नहीं रहता। हे कुलकलंक! तुझे धिक्कार है।'' ऐसे कठोर वचन सुनने के पश्चात विभीषण बोला ''हे राजन्! बड़ा भाई पिता तुल्य होता है। तू भूला हुआ जो चाहे मुझसे कह कर धर्म मार्ग पर स्थित होने से बड़े भाई के भी कठोर वाक्य नहीं सह सकता। हे राजन् सदा प्रिय बोलने वाले पुरुष सुलभ है। परन्तु अप्रिय हितकर वचन को कहने और सुनने वाले दोनों दुर्लभ हैं। आपको मेरे हितकर वचन अच्छे नहीं लगे इसलिए मैं यहाँ नहीं रह सकता हूँ। आप अपनी तथा इस पुरी की रक्षा करें। आपका कल्याण हो।'' इतना कहकर विभीषण अपने चार मित्र राक्षसों सहित उठ खड़ा हुआ और उसने पुरी को छोड़ दिया।

टिप्पणी:- रामायण के अध्ययन और योग दर्शन के प्रत्यक्ष, अनुमान व आगम प्रमाणों के अनुसार यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि श्री रामचन्द्र जी एक महामानव थे, ना कि ईश्वर के अवतार। इस प्रकरण में हम एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रमाण पाठकों के लिए दे रहे हैं। जिसे पढ़कर सामान्य सा व्यक्ति भी भ्रान्ति से परे हो जाएगा। जब हनुमान जी लंका में शौर्य व पराक्रम दिखाकर सब लंका वासियों को भयभीत करें बिना कोई भय खाए सकुशल वापिस पहुँच गया तो रावण सहित बड़े-बड़े योद्धा भी आश्चर्य चकित रह गए और उनके मन के अन्दर भी उदासीनता भर गई। इसके पश्चात रावण ने अपने मन्त्रीमण्डल की आपातकालीन बैठक बुलवाई और मन्त्रियों के साथ-साथ प्रमुख योद्धाओं को भी शीघ्र ही बैठक में आने के लिए आज्ञा दी और कहा

मंत्रस्त्रिमिर्हि संयुक्तः समर्थैर्मत्रनिर्णये।
मित्रैर्वापि समानार्थैर्बान्धवैरपिवाधिकैः।।
सहित मन्त्रयित्वा यः कर्मारंभान्प्रवर्तयेत्।
दैवे च कुरूते यत्नं तमाहुः पुरूषोत्तम्।।

युद्ध.का. सर्ग 3 श्लोक 5-6

कि जो पुरुष समर्थ हितकारी मन्त्रियों, मित्रों

thearyasamaj.org

तथा समान अर्थ वाले बान्धवों से सम्मति अर्थात विचार विमर्श करके अपना कार्य आरम्भ करता है और परमात्मा परायण होकर यत्न करता है, उसे उत्तम कोटि का पुरुष कहते हैं। अब इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि स्वयं रावण भी परमात्मा को मानरहा है। उस निराकार सर्वव्यापक की सत्ता स्वीकार कर रहा है। ऋषि, मुनि, शबरी इत्यादि तो जानते थे कि श्रीराम परमात्मा का अवतार धारण करके आये हैं लेकिन इस बात का रावण को पता क्यों नहीं लगा? घोर आश्चर्य की बात है अगर रावण को इस बात का पता था तो रावण परमात्मा से क्यों पंगा ले रहा था? लेकिन सत्य यह है कि रावण गुरूकुल का स्नातक था और उस समय यह अवतार वाद आदि का पाखण्ड विद्यमान नहीं था। सभी व्यक्ति परमात्मा के सत्य स्वरूप को जानने वाले थे। राम और रावण दोनों भी उसी परमपिता परमात्मा को मानते थे। दूसरी जो बात यहाँ विचारणीय है कि अगर आपके इर्द्ध गिर्द्ध चाटुकारों व अज्ञानियों की फौज है तो आप सही निर्णय नहीं ले सकते। हनुमान. के लंका से वापिस आने के पश्चात अगर विभीषण के साथ-साथ और दो-चार बड़े सेनापति रावण को सीता वापिस लौटाने की बात कह देते तो रावण उन परिस्थितियों में सीता को लौटाने के लिए तैयार हो जाता। क्योंकि रावण यह समझ चुका था कि राम सुग्रीव की सेना लेकर अवश्य आएगा और भयंकर युद्ध होगा लेकिन ठीक ही कहा है कि जिसके जैसे सलाहकार होंगे वह वैसा ही निर्णय लेगा। अगर विभीषण का साथ कुम्भकर्ण भी दे देता तो भी रावण विचार करने के लिए विवश हो जाता। लेकिन कुम्भकर्ण ने क्रोधित होकर उसके सीता हरण के कार्य को तो गलत बताया लेकिन फिर कहा कि मैं तेरे शत्रुओं को मारकर तेरा कार्य पूरा करूँगा तो रावण को और बल मिल गया जिससे वह फिर अहंकार में हो गया। विभीषण की शिक्षाप्रद बातें नगार खाने में तूती की आवाज बनकर रह गई।

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	23.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	28.00	रु. प्रति किलो
विशेष	45.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	65.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	120.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

thearyasamaj.org

एक मुलाकात स्वामी दयानन्द से

- कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा

कन्हैया लाल आर्य

प्रात:काल का समय था, दरवाजे का खटखटाहट हुई। इतने प्रात: कौन आ सकता है! कितनी ही आशंकाओं से भरा हुआ मैं द्वार खोलता हूं, क्या देखता हूं कि एक संन्यासी मुझे देखकर जिज्ञासा भाव से मुस्करा रहा है। अभी मैं न तो गहरी नींद में था और स्पष्टत: जागा। यह क्या? एक तेज रोशनी मेरी आंखो में पड़ती है, मुझे अपनी आंखो पर विश्वास नहीं आ रहा था कि जिस व्यक्ति की हर जगह पर जय-जयकार बोली जा रही है। वही विशालकाय संन्यासी मेरे सम्मुख खड़ा है! वह संन्यासी मन्द-मन्द मुस्करा रहा है और मैं असंमजस में पड़ा हुआ कभी अपने आपको और कभी उस संन्यासी को देख रहा हूं। मुझे विश्वास नहीं आ रहा था। अरे! उन्हें तो स्वर्ग सिधारे 131 वर्ष हो चुके हैं। वे इस रूप में कैसे आ सकते हैं? मैंने अपने आप को संभाला और वे संन्यासी मुस्कुराते हुए कहने लगे, 'आर्य जी! घबराने की कोई बात नहीं। मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती हूं।' उनके ऐसा कहते ही मैं अचम्भे में पड़ गया परन्तु इससे पूर्व मैं और अधिक परेशानी अनुभव करता उन्होंने कहा-'आर्य जी, मैं आपके सामने कुछ प्रश्न रखना चाहता हूं। उनके मुझे उत्तर दीजिए।'' यह कहते ही वह मेरे कन्धे पर हाथ रखकर धीरे-धीरे चलते हुए मेरे अतिथि गृह तक पहुंच गये और मुझे अपने सामने बिठाकर ये प्रश्न करने लगे-

1. मैंने जो सत्य सनातन वैदिक धर्म की मशाल आप के हाथों में दी थी, क्या वह मशाल जल रही है या बुझने के कगार पर है?
2. जिस जाति-पांति का मैंने जीवन भर विरोध किया था, क्या तुम उन्हीं जाति सूचक शब्द का प्रयोग करके डींग नहीं मारते हो?
3. जिन नियमों-उपनियमों के आधार पर मैंने आर्यसमाज की नींव रखी थी क्या तुम इस नींव को खोखला करने में नहीं लगे हो?
4. मैंने तुम्हे श्रेष्ठ सीधा-सच्चा व वेद-मार्ग दिखाया था जो प्रभु का आदेश, उपदेश और सन्देश है, उसका तुम्हें आधार दिया था। उसके प्रचार प्रसार का कार्य छोड़ कर क्या तुम भी आर्यसमाज के रूप में भवनों, दुकानों स्कूलों और बारात घर की पंक्तियां नहीं सजा रहे हो?
5. मैंने जो सत्य सनातन वैदिक धर्म की मशाल तुम्हारे हाथों में दी थी, क्या तुम उसे आर्य समाज मन्दिर में बने स्कूल, दुकान, बारात घर और औषधालय के कोने में रखकर-''वेद की ज्योति जलती रहे'' व ''ओ३म् का झंडा ऊंचा रहे'' बोलकर शांति पाठ नहीं करा रहे हो?
6. साप्ताहिक कार्यक्रम को तुमने इतना नीरस बना दिया है कि हवन किया, दो भजन बोले, सूचना दी और कार्यक्रम की इति श्री कर दी। क्या इसी हेतु मैंने आर्यसमाज की स्थापना की थी? वेद पढ़ने-पढ़ाने की बात तो दूर, तुमने सुनना और सुनाना भी बन्द कर दिया।
7. क्या तुम महापुरुषों के चित्रों के नीचे कव्वालियों और लड़कों और लड़कियों के नाच नहीं करा रहे हो?
8. भजन सन्ध्या के नाम पर मूर्ति-पूजा जैसे भयंकर पाप को क्या तुम नहीं कर रहे हो?
9. वेद प्रचार की बजाय गीता ज्ञान की कथायें क्या तुम्हारे आर्यसमाज में नहीं हो रही हैं? आज गीता कथा करने वाले विद्वान तुम्हारे आर्यसमाजों में अधिक सम्मान प्राप्त कर रहे हैं और वेद कथा कहने वाले विद्वान उपेक्षित! ऐसा क्यों?
10. जिस सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को मैंने जन कल्याण व वेद प्रचार हेतु बड़े परिश्रम से लिखा था उसे घर घर पहुंचाने की अपेक्षा क्या अपने पुस्तकालयों की अल्मारियों में तुम ने बन्द नहीं कर दिया है?
11. मैंने जिन पाखण्डों, गुरुडम, अज्ञान आदि को दूर करने के लिए सत्रह बार विष पीया, क्या तुम उन्हीं पाखण्डों का शिकार नहीं हो गये थे? क्या तुम्हारे प्रत्येक के घर में वैदिक विचार के स्थान पर गुरुडम के स्थान नहीं ले लिया है? क्या तुमने कभी वैदिक ज्ञान प्राप्त कर अज्ञानता को दूर करने के लिए समय निकाला है?

(क्रमश:)

thearyasamaj.org

स्वामी धर्ममुनि जी के जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां

स्वामी जी का स्वागत करते हुए स्वामी रामानन्द जी

स्वामी जी का स्वागत करते हुए स्वामी महेन्द्रानन्द जी

स्वामी जी का स्वागत करते हुए वानप्रस्थी ईशमुनि जी

स्वामी जी का स्वागत करते हुए हैडमास्टर आनन्द सिंह सपत्नीक

स्वामी जी का स्वागत करते हुए पं. रमेश चन्द्र जी आर्य

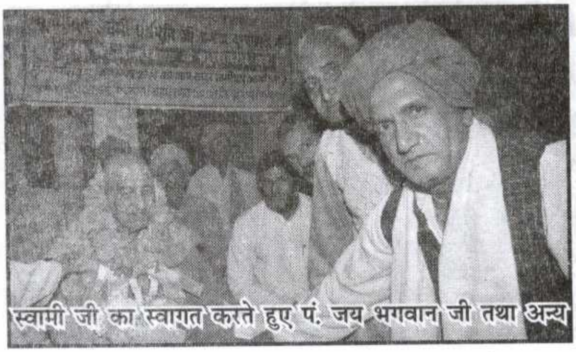
स्वामी जी का स्वागत करते हुए पं. जय भगवान जी तथा अन्य

स्वामी जी का स्वागत करते हुए श्रीमती भारती सिसोदिया जी

स्वामी जी का स्वागत करते हुए पं. खुशीराम जी आचार्य

thearyasamaj.org

स्वामी धर्ममुनि जी के जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां

स्वामी जी का स्वागत करते हुए प्रधान रामफल जी आर्य

स्वामी जी का स्वागत करते हुए श्रीमती विमल बुद्धिराजा

स्वामी जी का स्वागत करते हुए श्रद्धालु माताएं

स्वामी जी का स्वागत करते हुए बुद्धिराजा परिवार तथा अन्य

स्वामी जी का स्वागत करते हुए पुरुषार्थ दम्पत्ति

स्वामी जी का स्वागत करते हुए वा. दर्शनमुनि जी

स्वामी जी का स्वागत करते हुए वा. मनुदेव जी

स्वामी जी का स्वागत करते हुए माता वेदकौर वानप्रस्थी

thearyasamaj.org

स्वामी धर्ममुनि जी के जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां

स्वामी जी का स्वागत करते हुए श्री उम्मेद सिंह आर्य

स्वामी जी का स्वागत करते हुए योगनिष्ठ सत्यपाल दम्पत्ति

स्वामी जी का स्वागत करते हुए श्रीमती रामदुलारी बंसल

स्वामी जी का स्वागत करते हुए संगीताचार्य, लक्ष्मण प्रसाद परिवार

स्वामी जी का स्वागत करते हुए लाला चतुर्भुज जी बंसल

स्वामी जी का स्वागत करते हुए पं. धर्मदेव शास्त्री

स्वामी जी का स्वागत करते हुए पं. विवेकानन्द शास्त्री

स्वामी जी का स्वागत करते हुए ब्र. कर्ण आर्य

thearyasamaj.org

स्वामी धर्ममुनि जी के जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां

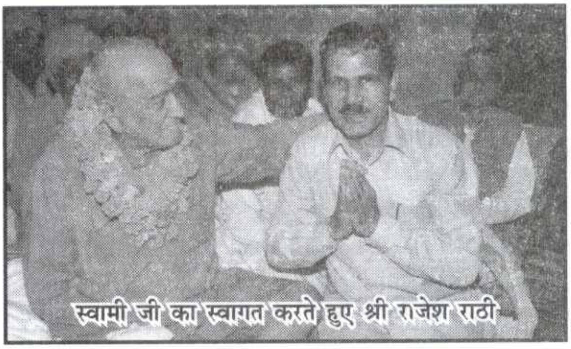
स्वामी जी का स्वागत करते हुए श्री राजेश राठी

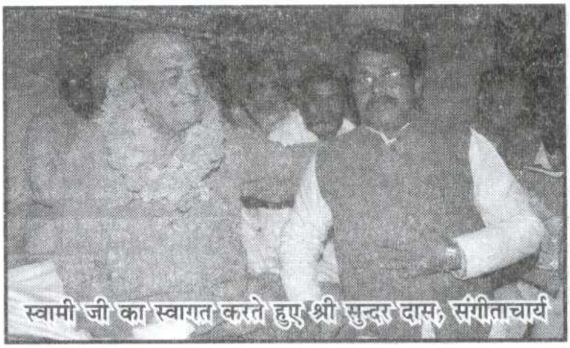
स्वामी जी का स्वागत करते हुए श्री सुन्दर दास, संगीताचार्य

स्वामी जी का स्वागत करते हुए गुप्ता जी एवम् अन्य साथी

स्वामी जी का स्वागत करते हुए श्री सुरजभान शर्मा

स्वामी जी का स्वागत करते हुए रामकुमार जी

डाक्टर रोगियों की स्वास्थय जांच करते हुए

रोगी निःशुल्क दवाई प्राप्त करते हुए।

डाक्टर अमित गुप्ता रोगियों की स्वास्थय जांच करते हुए

thearyasamaj.org

मांसाहार-कितना हानिकारक

- श्री विनोद राही

1. मांसाहार से लकवा (पक्षाघात), गुर्दे में पथरी, प्रोस्टेट कैंसर, गर्भाशय-ग्रीवा में कैंसर, पौष्टिक अल्सर (आमाशय में घाव), डायबिटिज, हार्निया, गॉलब्लेडर स्टोन (पित्ताशय में पथरी), बड़ी आँत में जलन, हृदय-रोग, कब्ज, हायपरटेंशन (उच्च रक्तचाप), ऑस्टिओपोरोसिस (अस्थियों की विरलता), बड़ी आँत में कैंसर, गुर्दों के रोग, मोटापा, दमा इत्यादि कई रोग हो जाते हैं। सन्तुलित शाकाहार द्वारा इन रोगों से शत-प्रतिशत बचा जा सकता है।

2. मांसाहार जलाभाव-जैसी गम्भीर समस्या को जन्म देता है। याद रखें, एक पौण्ड गेहूँ के उत्पादन में जहाँ एक ओर सिर्फ 25 गैलन पानी लगता है, वहीं एक पौण्ड मांस के उत्पादन में 2,500 गैलन पानी खर्च होता है।

3. यह आरोप निराधार है कि शाकाहार के कारण कोई खाद्य-संकट हो सकता है। हम उसे एक उदाहरण से समझें कि अमरीकी पशु जितना अन्न और सोयाबीन खाते हैं, उतने से एक अरब तीन करोड़ लोगों का पेट भरा जा सकता है।

4. मांसाहार के कारण दुनिया के अनेक देशों की जमीन बंजर हुई जा रही है। वाशिंगटन स्थित 'वर्ल्डवाच इंस्टीट्यूट' ने चेतावनी दी है कि यदि मांसाहार नहीं घटाया गया तो विश्व को एक बहुत बड़े संकट का सामना करना पड़ेगा।

5. किसी भी प्रकार के मांस में कार्बोहाइड्रेट्स नहीं होते, अत: इनके अभाव में आँतों में तरह-तरह की बीमारियाँ हो जाती हैं।

6. किसी भी प्रकार के मांसाहार में विटामिन 'सी' (एस्कॉर्बिक एसिड) नहीं होता, जिसके कारण मांसाहारी ग्रास नली के कैंसर से प्राय: ग्रस्त हो जाते हैं। विटामिन 'सी' को सार्वभौम विषावरोधक (यूनिवर्सल एण्टीटोक्सिन) माना गया है और वह कैंसर-प्रतिरोधक में कवच का कार्य करता है। मांसाहारी इस अद्भुत अमृत से वंचित रहता है; जबकि नींबू, आँवला आदि इसके समृद्ध स्त्रोत हैं।

7. 100 ग्राम मांसाहार से अधिकतम 194 कैलोरियाँ प्राप्त की जा सकती है, जबकि 100 ग्राम गेहूँ के आटे, सोयाबीन, मूँगफली अथवा नारियल से क्रमश: 353/432/564/444 कैलोरियाँ सहज ही मिल सकती हैं। याद रहे, एक व्यस्क पुरुष को प्रतिदिन 2400 तथा स्त्री को 2000 कैलोरी की जरूरत होती है।

8. अमेरिका के नोबल पुरस्कार-विजेता डॉ. माइकेल ब्राउन और डॉ. जोसेफ गोल्डस्टीन का निष्कर्ष है कि मांस में कोलेस्टेरोल की मात्रा अधिक होती है, अत: इससे हृदयरोग, चर्मरोग, पथरी आदि उत्पन्न हो सकते हैं। किसी भी वानस्पतिक आहार में कोलेस्टेरोल नहीं होता।

9.रॉबर्ट ग्रास ने अपनी लोकप्रिय पुस्तक 'हाउ हेल्दी आर एग्ज? में लिखा है कि अण्डे की सफेदी में 'एविडिन नामक जहर होता है, जो खाज-खुजली, दाद, कोढ़-जैसे रोग उत्पन्न करता है।

10. व्यापारिक दृष्टि से पशुओं का वजन बढ़ाने के लिये उन्हें तरह-तरह के रासायनिक मिश्रण दिये जाते हैं, जिनमें से एक है-डेस (डायथिस्टिलबेस्ट्रॉल) जो गर्भवती स्त्रियाँ डेसयुक्त मांस का भक्षण करती हैं, उनकी सन्तान को आगे चलकर कैंसर की सम्भावना रहती है। कई डेसबेबीज युवा होने पर कैंसर का शिकार हुई हैं। पुरुषों में इस तरह का मांस स्त्रैणता का कारण बनता है। यद्यपि इसके उपयोग पर विकसित देशों ने रोक लगा रखी है तथापि विकसित एवं विकासशील दोनों मुल्कों में इसका चोरी-छिपे व्यापक उपयोग होता है।

11. स्थापित तथ्य है कि आहार में जितना अधिक प्रोटीन होगा, कैल्शियम की हानि भी उस अनुपात में उतनी ही अधिक होगी। उच्च प्रोटीनयुक्त आहार-मुख्यत: मांसाहार से हड्डियों की सघनता क्रमश: घटती है और वे कमजोर पड़ जाती हैं।

12. मांस, अण्डे, मछली आदि सर्वाधिक अम्लोत्पादक (एसिड फार्मिंग) पदार्थ हैं, अत: इनके सेवन से एसिडिटी होना स्वाभाविक ही है।

13. पशुजनित प्रोटीन (मांसाहार से प्राप्त प्रोटीन) कई समस्याएँ खड़ी करता है, जिसमें से एक गम्भीर

thearyasamaj.org

समस्या है-गुर्दे में पथरी का बनना। ध्यान रहे, अतिरिक्त प्रोटीन न केवल कैल्शियम के संचित कोष को खाली करता है वरन् गुर्दे (किडनी)-से अधिक श्रम लेकर उसे बुरी तरह क्षतिग्रस्त कर देता है।

14. मांस को पचाने की क्रिया बड़ी आँत में कैंसर कारक पदार्थ उत्पन्न होते हैं, अत: मांसाहारियों में बड़ी आँत के कैंसर की दर ऊँची होती है।

15. तन्तु (रेशा, फाइबर) आँत में बुहारी का काम करते हैं। ये आँत की लगातार सफाई करते रहते हैं। रेशारहित आहार के कारण आँत में चिकना मलवा जमा हो जाता है, यदि किसी व्यक्ति के आहार में पशु-वसा (एनीमल-फैट) है तो उस पर यह बात भरपूर लागू होती है। वसा (फैट)-से आँतें रुद्ध हो जाती हैं। आँतों में आहार के अधिक लम्बे समय तक बने रहने से उसमें कई विषाक्त पदार्थ उत्पन्न हो जाते हैं तथा आँतभित्तियाँ अधिक विष सोखने लगती हैं। क्रॉनिक अल्सरेटिव कोलाइटीज (एक प्रकार की संग्रहणी) एक लाइलाज बीमारी है, जो मांसाहारियों को ही अधिक होती है। रेशायुक्त शाकाहारी भोजन करने वाले इस रोग से बचे रहते हैं। रेशायुक्त शाकाहार कई कैंसरकारक विषों को निष्क्रिय करने में मदद करता है, साथ ही दाँतों की सड़न को भी रोकता है।

16. टोकियो के नेशनल कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट के डॉ. हिरायामा का निष्कर्ष है कि जो महिलाएँ प्रतिदिन मांसाहार करती हैं, वे उन महिलाओं की तुलना में जो मांस नहीं लेती, कैंसर का चार गुना अधिक खतरा उठाती है। इसीतरह अण्डे खाने का मतलब भी स्तन के कैंसर को बुलावा देना है।

17. एक लड़की जितना अधिक मांस-भक्षण करेगी, वह उतनी ही जल्दी रजस्वला होगी और तदनुसार स्तन कैंसर का खतरा भी उसे उतना ही अधिक होगा। मांस और अण्डायुक्त आहार मासिक धर्म बन्द होने की स्वाभाविक अवधि को भी बिलम्बित तथा बाधित करता है।

18. जो लोग मांसाहार तथा अन्य उच्च वसायुक्त आहार छोड़ देते हैं, उन्हें 30 प्रतिशित इंसुलिन की कम जरूरत पड़ती है तथा उनका ब्लड-शुगर-लेवल (रक्त में ग्लूकोज का स्तर) अधिक स्थिर रहता है।

19. हाइपोग्लाइसीमिआ अमेरिका में व्याप्त एक ऐसी बीमारी है, जिसमें दुर्बलता, चक्कर आना या भ्रान्ति होना-जैसे लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। रक्त में ग्लूकोज के स्तर में गिरावट के कारण ऐसा होता है। वस्तुत: हाइपोग्लाइसीमिआ बीमारी उन लोगों में होती है; जो मांस, शक्कर और वसा का भरपूर उपभोग करते हैं।

20. प्रोस्टेट ग्लैण्ड (पौरुषग्रन्थि)- के कैंसर का मांसाहार के सीधा सम्बन्ध है। लोमालिण्डा यूनिवर्सिटी (कैलीफोर्निया) में 64,000 व्यक्तियों पर 20 वर्षों तक चले अध्ययन के अनुसार मांस, अण्डे आदि खानेवाले व्यक्तियों में शाकाहारियों की तुलना में कैंसर की आशंका 3.6 गुना अधिक होती है।

21. अमेरिका-जैसे विकसित देश में मृत्यु के आठ बड़े कारणों में एक है डायबिटीज (मधुमेह)। यह रोग मांसाहार से होता है। इससे नसें इतनी क्षीण और जर्जर हो जाती है कि 80 प्रतिशत मधुमेह-रोगी आँखों की क्षति से पीड़ित रहते हैं। अमेरिका में अन्धेपन के जो नये केस दर्ज हुए हैं, उनमें मधुमेह-रोगी ही अधिक हैं।

22. मांसाहार किडनी (गुर्दे)- तक रक्त की आपूर्ति में बाधक बनता है। इसमें नसों के अन्तिम छोर तक खून का दौर इतना कम पड़ जाता है कि पाँव की अँगुलियाँ में जरा-सी छूत भी गंग्रीन का कारण बन जाती है, तब फिर या तो पूरा पाँव कटाना होता है या फिर प्राणों से हाथ धोना पड़ता है।

23. वेने स्टेट यूनिवर्सिटी मेडिकल स्कूल (अमेरिका) में चिकित्सा-सम्बन्धी अनुसन्धान करनेवाले छात्रों ने शोथ के छ: रोगियों को जब वसारहित शाकाहार दिया, तब उनमें सात हफ्तों में रोग के लक्षण पूरी तरह लुप्त हो गये, किन्तु जब उन्हें पुन: मांसाहार दिया गया तब लक्षण उभर आये।

24. पशुओं को जैसे ही बूचड़ खानों की ओर ले जाया जाता है। वे जो घटित होने जा रहा है उसका आभास पा लेते हैं और क्रोधावेश में भयंकर व्यवहार करने लगते हैं तथा पागलों की तरह हो जाते हैं। उन्हें इस दशा में मारा जाता है और उनका मांस बाजार में बिकने आता है। यह मांस जहरीला हो जाता है, फलस्वरूप उसे खाने वाले मनुष्यों में ऐंठन, तनाव, सन्निपात, मिर्गी एवं आकस्मिक मृत्यु-जैसे अनेक रोग घर कर लेते हैं।

25. जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के डॉ. एलन

thearyasamaj.org

वाकरने दाँतों के माइक्रोस्कोपिक विश्लेषण से पता लगाया है कि मनुष्य फल खाने वाले प्राणियों का वंशज है, न कि मांस खाने वालों का।

26. स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क (बफैलो) में की गयी खोज से यह सामने आया है कि अमेरिका में 47000 से भी अधिक ऐसे बच्चे हर वर्ष जन्म लेते हैं, जिन्हें माता-पिता के मांसाहारी होने के कारण कई बीमारियाँ जन्म से ही लगी होती हैं और जो बड़े होने पर भी पूर्णतः तन्दुरुस्त नहीं रह पाते।

27. एक रिपोर्ट के अनुसार 'ब्रेनबग' नामक कीट के काटने से पशु पागल हो जाता है, किन्तु पागलपन के रोग को पूरी तरह विकसित होने में दस वर्ष लग जाते हैं। इस बीच यदि कोई व्यक्ति इस कीड़े द्वारा काटे हुए पशु का मांस खाता है तो पशु में पलने वाला यह रोग उसके शरीर में प्रवेश कर जाता है।

28. विश्व-स्वास्थ्य-संगठन की बुलेटिन-संख्या

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. चौ. मित्रसेन जी सिन्धु आर्य, उद्योगपति, रोहतक
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
48. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
49. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
50. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
51. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
52. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
53. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
54. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
55. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
56. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
57. यज्ञ समिति झज्जर
58. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
59. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
60. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
61. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
62. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
63. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
64. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
65. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
66. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
67. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली

thearyasamaj.org

अन्त्येष्टि संस्कार अथवा मृतक संस्कार (विधि)

-मनुदेव 'अभय'

संस्कार विधि का प्रभाव

परमपिता परमात्मा का आशीर्वाद तथा महर्षि दयानन्द के उच्च कोटि के तप का हिन्दू समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। सब से अधिक यह लाभ हुआ कि परिवारों में बालक बालिकाओं के नाम सुन्दर, सरल तथा भाव प्रधान बन गये। समाज का शिक्षित वर्ग दिन में ही वैदिक-विधि से विवाह-संस्कार कराने लग गये। समाज का सुशिक्षित, धनाढ्य तथा अभिजात्य वर्ग वैदिक विधि से ही अन्त्येष्टि संस्कार (मृतक संस्कार) कराने लगा। आर्य परिवारों में वैदिक-संस्कारों का प्रचलन भावात्मक एकता का प्रतीक बना। एकता का प्रतीक बना।

भारत सामाजिक रचना, संगठन तथा उन्नयन हेतु प्रचारित गृह्यसूत्रों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। गृह्य-सूत्र शब्द अर्थ गृह अर्थात् गृहस्थितयों के वैयक्तिक, पारिवारिक तथा सामाजिक कार्यों की समयोचित प्रबन्धन व्यवस्था जिसके अन्तर्गत शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति हो सके। इसी महान उद्देश्य को लक्ष्य कर महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के 10 नियमों में से नियम संख्या 6बताया है-''संसार का उपकार करना, इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करना।'' दूसरे शब्दों में

The Prime object of this society is to do good to the whole world, that is to improve the physical spiritual and social standard of all.

संसार के किसी भी संगठन का यह वृहत् गामी महान उद्देश्य शायद की कहीं देखने या पढ़ने को मिले।

सामाजिक ऐक्य- ऋषिवर की मान्यता थी कि जब तक एक धर्म, एक भाषा, एक संस्कृतिएवं समान संस्कार स्थापित नहीं होते तब तक किसी भी समाज या राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती। इसी विचार को स्थापित तथा प्रचारित प्रसारित करने की दृष्टि से उन्होंने बहुत ही परिश्रम सहित संस्कार-विधि की रचना की। यद्यपि महर्षि ने छोटी-बड़ी कुल 60 पुस्तकें लिखीं, किन्तु 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, सत्यार्थप्रकाश तथा संस्कार-विधि विशेष रूप से अपनाई गई। संस्कार-विधि एक ऐसा महान ग्रंथ है-जिसमें जन्म से पूर्व पश्चात् मध्य तथा मृत्यु के पश्चात् भी वैदिक कर्मकाण्डों को विधिवत् सम्पन्न करने में सहायक है। इसीलिए एक विद्वान् ने ठीक ही लिखा था-'संस्कार-विधि एक सुन्दर और सुदृढ़ सीढ़ी है, जिस पर चलकर मनुष्य देवता की कोटि में आकर खड़ा हो सकता है। वस्तुतः संस्कार-विधि वह सरलतम ग्रंथ है, जिसके द्वारा सामान्य श्रेणी का शिक्षित व्यक्ति विधिवत् संस्कार सम्पन्न करा कर वैदिक धर्म का प्रचार कर सकता है। इसमें किसी विशेष प्रशिक्षण-प्रशिक्षुत की आवश्यकता ही नहीं है।

संस्कारों की संख्या-संस्कार कितने हों? इस सम्बन्ध में अलग-अलग युग में आचार्यों की अलग मत-प्रस्थापनाएँ हैं। कि आज 2.500 वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए स्वामी शंकराचार्य से जिन 16 संस्कारों का प्रतिपादन किया, महर्षि दयानन्द ने उन्हीं का अनुकरण करते हुए इस संस्कार में स्थान देकर उन्हें यथा समय सम्पन्न कराने का निर्देश दिया। अपनी मान्यता को घोषित करते हुए महर्षि दयानन्द को इस ग्रंथ के आमुख पर स्पष्ट रूप से लिखा-''संस्कार विधिः वेदानुकूलै गर्भाधानान्त्येष्टि पर्यन्तैः षोडशसंस्कारैः समन्वितः।'' अर्थात् गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्त्येष्टि संस्कार (मृतक संस्कार) वेदों के अनुकूल तक संस्कारों का वर्णन और उन्हें सम्पन्न करने की वैदिक विधि। इस प्रकार आर्य सामाजिक क्षेत्र एवं आर्य-परिवारों में पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक द्वारा सम्पादित संस्कार विधि सर्वाधिक प्रचलित है।

अंतिम संस्कार क्रिया- उपरोक्त विवरण को थोड़ा सा मोड़ देते हुए सहसा एक गंभीर प्रश्न पर विचार करने का मन (मूड) बन गया। हमारे षोडश संस्कारों का अथ (प्रारम्भ) गर्भाधान संस्कार से होकर इति (अन्त) अन्त्येष्टि संस्कार पर होता है। यहाँ हम हमारे पाठकों का ध्यान इस संस्कार के प्रारम्भ और अन्त के शीर्षकों की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं। ऋषिवर दयानन्द ने इस अंतिम संस्कार का शीर्षक 'अथान्त्येष्टि कर्म विधि वक्ष्यामः' तथा संस्कार की समाप्ति के पश्चात्' इति मृतक संस्कार विधिः समाप्तः॥' इन्हें पढ़कर एक मुहावरा याद आ रहा है-''Higher the aims Higher the efforts'' उच्च उद्देश्यों (महत्वाकांक्षाओं) की प्राप्ति के लिए उसी स्तर से, उच्च स्तरीय प्रयास भी करना चाहिए। ''To make the better man'' मनुष्य को श्रेष्ठतर मनुष्य बनाना संस्कारों का उद्देश्य है। इस अन्त्येष्टि संस्कार में, जोकि जीव-रहित शरीर है, उसे श्रेष्ठ कैसे बनाया जा सकता है। संस्कार शब्द हो मार्जन-परिमार्जन,

thearyasamaj.org

मनोनुकूल गढ़ना, पुरानी गंदगी को हटाकर उस नवीनता और मौलिकता प्रदान करना है। आत्मा-रहित शव पर यह तनिक भी लागू नहीं होता।

भाव सुधारो भव सुधरेगा:- दर्शनशास्त्र के अनुसार जीवात्मा के छ: लक्षण, दु:ख-सुख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न तथा गतिशीलता है। जब से छ: लक्षणों वाला जीवात्मा शरीर को छोड़कर अन्यत्र चला गया, तब मृतक शरीर का संस्कार क्या सम्भव है? संस्कृत के विद्वानों के मतानुसार मृदा से मृत्यु का संबंद्ध है। छिति जल पावक गगन समीरा, पंचतत्व यह रचा सरीरा' के अनुसार छिति-पृथ्वी मिट्‌टी-मृदा यह पाँच तत्वों में प्रथम है। लोक भाषा में शव को मिट्‌टी भी कहा जाता है।' आत्मा-रहित शरीर 'शव' तथा आत्मा सहित शरीर शिव। बस केवल छोटी इ की मात्रा ही बड़ा भारी परिवर्तन कहर देती है। इसीलिए कहा है-भाव सुधारो भव सुधर जाएगा।

लेकर आना जाना-इन पंक्तियों का लेखक वर्षो से अपने लेखों में यह प्रतिपादन करता आया है कि यह जीवात्मा। 'खाली' आया है और न खली जाएगा। मानव शरीर धारण करने के पूर्व पहिले की अनेक योनियों के संस्कार इस जीव के सूक्ष्म शरीर में विद्यमान रहते हैं। ठीक इसी तरह मानव शरी धारण कर जन्म लेते ही मानव-योनि के कर्म-जन्य संस्कार संगृहीव होने लगते हैं, जब मृत्यु के पश्चात् यह सारे संस्कार सूक्ष्म-शरीर सहित आगे चल देते हैं। अत: जब शरीर में जीवात्मा, कारण-शरीर सूक्ष्म शरीर विद्यमान नहीं है, तो फिर वही प्रश्न-'अन्त्येष्टि संस्कार किसका?

महर्षि दयानन्द ने अन्त्येष्टि-संस्कार हेतु जिन मंत्रों का संकल्प किया है, उनके अर्थ पर भी थोड़ा गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा। इस संस्कार में ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा तैत्तरीय उपनिषद के मंत्रों का संकलन है। इनकी कुल संख्या मात्र 121 है। यदि चार-व्यक्ति घी की आहुति देते हैं ना 484 आहूतियाँ घी की पड़ती हैं। यदि फिर भी घृत-सामग्री शेष रहे तो मंत्रों की पुनरावृत्ति कर शेष घी की आहूतियाँ दी जा सकती हैं। मुखाग्नि देने वाले को क्षौर-कर्म कराने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। तीसरे दिन शांतियज्ञ।

इस विषय पर पं. सत्यानन्द वेद वागीश ने कहा है-अन्त्येष्टि भी एक संस्कार है। अन्त्येष्टि कर्म उसको कहते हैं कि जो शरीर के अन्त का संस्कार है। मनुस्मृति में निषेकादिश्म शानान्तो मन्त्रै र्यस्योदितों विधि (2.93) अन्त्येष्टि के द्वारा इस शरीर का ही संस्कार किया जाता है गर्भाधान से लेकर संन्यास पर्यन्त 15 संस्कारों से आत्मा और शरीर दोनों का संस्कार होना है। किन्तु अन्त्येष्टि संस्कार से केवल शरीर का ही संस्कार होता है। संगत और सम्यक् क्रिया का नाम भी संस्कार है।

निर्जीव शरीर को यदि वैसे ही छोड़ दिया जाय तो वह निरन्तर विकारयुक्त होकर वायु, भूमि, जल आदि को विकृत करता हुआ रोगोत्पत्ति द्वारा विकारावस्था से पूर्व ही उसका पार्थिव आदि तत्त्वों में पवित्रतापूर्वक मिश्रण करने रूप संस्कार कर देने से, वह विकार जनकत्व-रूप दोष समाप्त हो जाता है। इस प्रकार यह सम्यक् संगत क्रिया भी हुई।

इसी प्रकार शरीर का दाह संस्कार करना मानो अपनी उच्च कोटि की सभ्यता, सौजन्यता और सांस्कृतिक श्रेष्ठता का परिचय देना है। जिस आत्मा-सहित शरीर जो माता-पिता, पत्नी, पुत्र-पुत्री अथवा निकट के व्यक्ति का होता है, के सहयोग त्याग आदि द्वारा हमारे विकास में सहयोगी होता है, अन्त समय में उस शरीर की भी सद्‌गति एवं भौतिक-रासायनिक क्रिया द्वारा समाप्त कर देना हमारी नैतिकतापूर्ण सौजन्यता का प्रतीक है।

इस सम्पूर्ण बौद्धिक ऊहोपोह से यही निष्कर्ष निकलता है कि परमात्मा की न्याय-व्यवस्था के अनुकूल आत्मा-रहित उस शरीर का जो अब मृतक है, का संस्कार यथोचित रूप में अवश्य ही कर देना चाहिए। यही कारण है महर्षि दयानन्द ने संस्कार की समाप्ति के पश्चात् सबसे अन्त में लिखा है-''इति मृतकसंस्कारविधि : समाप्त:।।''

इसका भी तात्पर्य यही है कि यह अंतिम संस्कार दिवंगत आत्मा का नहीं अपितु मात्र-गात्र अर्थात् शरीर (मृतक) का अन्त्येष्टि संस्कार है। इसके बाद कुछ नहीं।

उपरोक्त संक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण चिन्तन से यही निष्कर्ष प्राप्त होता है कि यह अन्तिम षोडशवां संस्कार आत्मा के लिए तो असम्भव है ही यह तो मात्र शरीर (मृतक) का वैज्ञानिक-विधि से अन्तिम विदाई का कृत्य है। इसकी विधि और वैज्ञानिकता की गहराई को समझकर ही जार्ज बर्नार्ड शा ने अपनी वसीयत-अन्तिम इच्छा पत्र, में ईसाई पंथ अनुगामी होने पर भी अपने शरीर को अग्नि में जलाने की इच्छा व्यक्त की थी, जिसका अनुपालन उनके परिजनों ने किया था।

-अ/13, सुदामा नगर, इन्दौर-452009

thearyasamaj.org

भजन

तर्ज:-हमने तुमसे प्यार किया है जितना,
कौन करेगा इतना

टेक:- युग युग जीवे धर्ममुनि ये अपना, प्रभु विनती हमारी सुनना।

1.20 नबम्बर जन्म दिवस है धर्ममुनि का मनाया।
गढ़ी संपला में माता सुखदेई ने था जाया
बहुत बड़ी थी घटना विनीत हमारी सुनना.....

2.वेदों के प्रचार कि खातिर आश्रम ये बनवाया
राष्ट्र धर्म के सेवा में अपना तन मन है लगाया
कौन करेगा इतना प्रभु विनती हमारी सुनना....

3.स्वामी दिव्यानन्द जी यहाँ पर योग सिखाने आते
मैत्रैय, सत्यपाल यहाँ पर सबको है बतलाते
तन-मन स्वस्थ है रखना विनती हमारी सुनना.

4.डा. सृकृति आकर यहाँ पर मधुर संगीत सुनाऐ
गुरूकुल लोवा की छात्राऐं सुन्दर भजन सुनाऐ
ध्यान से इनको सुनना विनती हमारी सुनना....

5.धर्ममुनि के जन्म दिवस पर गीत रमेश ने गाया
हम पर रहे हमेशा प्रभु जी धर्ममुनि का साया
याचना मेरी सुनना................

"वो रास्ता"

-ऋषि राम कुमार

न जाने क्यो? जब हमारा पड़ौसी
करता है उन्नति
तो हमें होती है
जलन-ईर्ष्या और द्वेष
हम ग्रस्त हैं हीन भावना से
हम चाहते हैं सिर्फ अपनी उन्नति
संर्कीणता की जहरीली बेल
हम पर हावी हो चुकी है
हो गये हैं परिपक्व घृणा से।
अगर आप चाहते हैं उन्नति
रास्ता बदलिये
रखिये उदार दृष्टि कोण
सबकी उन्नति में प्रसन्न रहिये
आडम्बर छोड़िये।
उन्नति छुयेगी आपके पाँव
अपनी मनोवृति बदलिये
आपको मिल जायेगा उन्नति का रास्ता
जो आपको अपनी मंजिल तक पहुँचा देगा।
246/4 मॉडल टाउन, गुड़गाँव (हरियाणा)122001

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम

1. एक दिन कर्मसिंह अपना ऑटोरिक्शा लेकर कहीं जा रहा था रास्ते में एक भिखारी ने कहा-भगवान के नाम पर कुछ दे दो।
कर्मसिंह-और तो अभी देने के लिये कुछ है नहीं, चल ऑटो में पीछे बैठ जा थोड़े से झूले तुझे दे देता हूँ।

2. पत्नी पति से-मुझे आपकी आँखों में सारी दुनिया साफ-साफ दिखाई देती है।
इतने में पीछे से एक बुद्ढा बोला-बेटी हमारी भैंस कई दिन से नहीं मिल रही, जरा पति की आँख में देख के बता कहाँ है?

3. पप्पु चप्पु से-यार चप्पु तेरी भैंसो ने मेरे सारे खेत खराब कर दिये
चप्पु-लेकिन यार मेरे पास तो कोई भैंस ही नहीं है।
पप्पू-तो मेरे पास कौन से खेत हैं।
भोपू अपने दोस्त से-आजकल सुबह साँस लेने में बहुत दिक्कत होने लगी है।
दोस्त-मुश्किल तो होगी ही क्योंकि सुबह सुबह सारी आक्सीजन तो बाबा रामदेव के चेले खींच लेते हैं।

5. नरेश कश्मीरीलाल से-मैं अपने सभी दोस्तों को भूल चुका था लेकिन कल एक फिल्म देखी तो सभी दोस्तों की बहुत याद आई।
कश्मीरी लाल-ऐसी कौन सी फिल्म देख ली तुमने?
नरेश-कमीने।

thearyasamaj.org

ब्रह्मचारी

तर्ज:- रामचन्द्र कह गए सिया से- -अशोक सिसौदिया

धर्ममुनि हैं कहें सभी से, स्वानुशासन जब आएगा,
धर्मक्षेत्र और कर्मक्षेत्र का, मार्ग सरल हो जाएगा।
1. धर्ममुनि ये कहे सभी से..........................(1)

ब्रह्मचर्य पहली सीढ़ी है, निष्ठा से नियम निभाने की, 2
गुरु आज्ञा को शिरोधार्य कर, सद्विद्या अपनाने की, 2
दृढ़ निश्चय से सरलमना हो, जो शिक्षा अपनाएगा।
2. धर्मक्षेत्र और कर्मक्षेत्र का, मार्ग सरल वो पाएगा।
धर्ममुनि हैं.......

अविवेकी जन का कहना है, पढो न पढो मरना है, 2
तब बेकार दन्तपंक्ति से, किट-किट-किट क्यों करना है, 2
स्वामी जी कुछ और बताते, उसको जो अपनाएगा।
3. धर्मक्षेत्र और कर्मक्षेत्र का, मार्ग सरल वो पाएगा।
धर्ममुनि हैं......

नहीं सुखार्थी विद्या को पाता, विद्यार्थी को सुःख कहाँ? 2
सुःख का इच्छुक विद्या त्यागे, विद्यार्जन में दुःख महा, 2
पाँच लक्षणों का स्वामी ही, विद्या धन को पाएगा।
4. धर्मक्षेत्र और कर्मक्षेत्र का, मार्ग सरल वो पाएगा।
धर्ममुनि हैं...

विद्यार्थी के पाँच लक्षण, स्वामीजी ने बतलाए, 2
काक चेष्टा ध्यान बगुले सा, श्वान निद्रा जो अपनाए, 2
गृह त्यागी औ स्वल्पाहारी, ही विद्या को पाएगा।

5. धर्मक्षेत्र और कर्मक्षेत्र का, मार्ग सरल वो पाएगा।
धर्ममुनि हैं......

'ब' से बल की 'र' से राशि, 'ह' से हृदय महान करें, 2
'म' से मनस्वी-तेजस्वी बन, अमित ज्ञान भण्डार भरें, 2
'च' से चेतनता पाकर जो, आगे कदम बढ़ाएगा।
6. धर्मक्षेत्र और कर्मक्षेत्र का, मार्ग सरल वो पाएगा।
धर्ममुनि हैं......

'र' से रश्मि फूटें ज्ञान की, 'य' से यश पा बढ़े चले, 2
ब्रह्मचर्य बल पा ब्रह्मचारी, जीवन में सोपान चढ़ें, 2
पाकर के वेदों की विद्या, शीर्ष शिखर पा जाएगा।
7. धर्मक्षेत्र और कर्मक्षेत्र का, मार्ग सरल वो पाएगा।
धर्ममुनि हैं......

धर्ममुनि हैं कहें सभी से, स्वानुशासन जब आएगा,

8. धर्मक्षेत्र और कर्मक्षेत्र का, मार्ग सरल वो पाएगा।

- आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2500/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

thearyasamaj.org

श्रद्धा-सुमन

- हैड मास्टरः आनन्द सिंह

पहले पवित्र बनो, तभी श्रेष्ठ बनोगे

आप का तन स्वच्छ हो तो यह तन की पवित्रता है 'मन में द्वेष, ईर्ष्या और बैर न हो तो यह मन की पवित्रता है' बुद्धि अच्छाई-बुराई का सही निर्णय ले तो यह बुद्धि की पवित्रता है। पवित्रता एक आभूषण है, संपदा है, जहाँ ये तीनों पवित्रता हों वह हृदय मन्दिर जैसा है और वहीं पर ईश्वर का वास है इसलिए मन, शरीर व बुद्धि इन तीनों को पवित्र बनाओ, तभी श्रेष्ठ बनोगे।

जो धन सत्कर्म में लगा, जो तन परोपकार में लगा जो मन ईश्वर-भक्ति में लगा, जो बुद्धि आत्म-विचार में लगी वही श्रेष्ठ व धन्य है।

"अपने विचारों और मन की शक्ति को मजबूत व पवित्र बनाना सीखो ताकि बुराइयाँ तुम्हारे अन्दर प्रवेश न कर सकें (गौतम बुद्ध)

'श्रेष्ठ बनो'

'कहने से नेक कर्म करना अधिक श्रेष्ठ है'

शब्दों से अनुभूति श्रेष्ठ है दान से दक्षिणा अधिक श्रेष्ठ है। गाने से कर्तव्य श्रेष्ठ है।

श्रद्धा-सुमन

जिसकी कथनी में कोयल सी चहक है।
जिसकी करनी में फूलों-सी महक है।
प्रेम से भरा दिल हो, उसमें सुगंध ही सुगंध है।
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है।

अनमोल रत्न व ज्ञान-सूत्र

1. वेदों में कहा गया है 'पहले स्वयं को पहचानो, फिर दुनिया को, आत्म-विश्लेषण परमज्ञान की कुंजी है।

2. ईश्वर मूर्तियों में नहीं, आपकी भावनाओं में है और आत्मा आपका मन्दिर है। (चाणक्य)

2बी. दिल व दिमाग में ज्ञान की जोत जलाओ, फिर मन पवित्र व निर्मल हो जायेगा।

3. लगातार पवित्र विचार करते रहें। बुरे संस्कारों को दबाने का एक मात्र समाधान यहीं है। चरित्र ही मनुष्य की इज्जत का पारसमणि है (स्वामी विवेकानन्द)

4. सच्चाई, ईमानदारी, चरित्र, परोपकार, नेक कर्म ही धर्म कहलाता है।

5. संन्ध्या का दीपक चन्द्रमा, दिन का दीपक सूर्य, तीनों लोकों का दीपक धर्म और ज्ञान का दीपक गुरु और सपूत संतान खानदान का दीपक है यानि पूरे कुल को प्रकाशित करता है।

6. चाँद के पैर तो छू लिये, तरक्की तो बहुत की, पर माँ-बाप के पैर छूना भूल गये, अपनों से दूर होते चले गये।

नोट-यह लेख मेरी पोती स्वाति ने लिखा है। मेरी उसके प्रति शुभकामना है कि वह ऐसे ही श्रेष्ठ व चरित्रवान रहे। उसका भविष्य उज्जवल और श्रेष्ठ रहे।

मेरी तरफ से उसको आशीर्वाद

मेरी तरफ से सभी विद्यार्थियों को यह तोहफा है आप भी इन अनमोल रत्नों को अपने जीवन में अमल में लोकर अपना भविष्य उज्जवल बनायें और चरित्रवान बनें।

- (राम.ठा.) सैक्टर-6, बहादुरगढ़

मोदी

- कवि कृष्ण सौमित्र, साहित्यकार

आए मोदी छाए मोदी
जन-जन के मन भाए मोदी
मोदी जी की बात निराली
भाषण देते बजती ताली
तनिक नहीं बोराएं मोदी

सहनशीलता बड़ी निराली
विरोधी जब देते है गाली
सुन गाली मुस्काएं मोदी

सफलता उनके कदम चूमती
दुनियां चारों और घुमती
प्यार ही प्यार लौटाएं मोदी

भारत मां के पूत निराले
सीधे सादे भोले भाले
माँ को शीश न वाएं मोदी

- मो. न. 08901272846, बहादुरगढ़-124507

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द और गुरूकुल प्रणाली

- मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती (1825-1883) आर्य समाज के संस्थापक हैं। आर्य समाज की स्थापना 10 अप्रैल, 1875 को मुम्बई के काकडवाड़ी स्थान पर हुई थी। इसी स्थान पर संसार का सबसे पुराना आर्य समाज आज भी स्थित है। आर्य समाज की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य वेदों का प्रचार व प्रसार था तथा साथ ही वेद पर आधारित धार्मिक तथा सामाजिक क्रान्ति करना भी था जिसमें आर्य समाज आंशिक रूप से सफल हुआ है। चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद सभी सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं। यह वेद सृष्टि के आरम्भ में सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सृष्टिकर्ता, सर्वान्तर्यामी परमश्वर से अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न प्रथम चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को उनके अन्त:करण में सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी ईश्वर की प्रेरणा द्वारा प्राप्त हुए थे। आजकल गुरू अपने शिष्यों को ज्ञान देता है और पहले से भी यही परम्परा चल रही है। वह बोल कर, व्याख्यान व उपदेश द्वारा ज्ञान देते हैं। ज्ञान प्राप्ति का दूसरा तरीका पुस्तकों का अध्ययन है। सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने ऋषियों वा मनुष्यों को ज्ञान देना था। ईश्वर अन्तरर्यामी है अर्थात् वह हमारी आत्माओं के भीतर भी सदा-सर्वदा उपस्थित रहता है। अत: वह अपना ज्ञान आत्मा के भीतर प्रेरणा द्वारा प्रदान करता है। यह ऐसा ही है जैसे गुरू का अपने शिष्य को बोलकर उपदेश करना। गुरू की आत्मा में जो विचार आता है वह उन विचारों को अपनी वाणी को प्रेरित करता है जिससे वह बोल उठती है। शिष्य के कर्ण उसका श्रवण करके उस वाणी को अपनी आत्मा तक पहुंचाते हैं। इस उदाहरण में गुरू का आत्मा और शिष्य की आत्मायें एक दूसरे से पृथक व दूर हैं अत: उन्हें बोलना व सुनना पड़ता है। परन्तु ईश्वर हमारे बाहर भी है और भीतर भी है। अत: उसे हमें कुछ बताने के लिए बोलने की आवश्यकता नहीं है। वह जीवात्मा के अन्त: करण में प्रेरणा द्वारा अपनी बात हमें कह देता है और हमें उसकी पूरी यथार्थ अनुभूति हो जाती है। इसी प्रकार से ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों को ज्ञान दिया था।

वर्तमान सृष्टि में वेदोत्पत्ति की घटना को 1,96,08,53,114 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इस लम्बी अवधि में वेद की भाषा संस्कृत से अनेकों भाषाओं की उत्पत्ति हो चुकी है। वर्तमान में संस्कृत का प्रचार न होने से यह भाषा कुछ लोगों तक सीमित हो गई। इसके विकारों से बनी भाषायें हिन्दी व अंग्रेजी व कुछ अन्य भाषायें हमारे देश व समाज में प्रचलित हैं। संस्कृत का अध्ययन कर वेदों के अर्थों को जाना जा सकता है। दूसरा उपाय महर्षि दयानन्द एवं उनके अनुयायी आर्य विद्वानों के हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में वेद भाष्यों का अध्ययन कर भी वेदों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर से वेदों की उत्पत्ति होने, संसार की प्राचीनतम पुस्तक होने, सब सत्य विद्याओं से युक्त होने, इनमें ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सत्य स्वरूप का यथार्थ वर्णन होने आदि कारणों से वेद आज व हर समय प्रासंगिक है। इस कारण वेदों का अध्ययन व अध्यापन सभी जागरूक, बुद्धिमान व विवेकी लोगों को करना परमावश्यक है अन्यथा वह इससे होने वाले लाभों से वंचित रहेंगे। वेदों से दूर जाने अर्थात् वेद ज्ञान का अध्ययन व अध्यापन बन्द होने के कारण संसार में अज्ञान व अन्धविश्वास उत्पन्न हुए जिससे हमारे देश व मनुष्यों का पतन हुआ और हम गुलामी व अनेक दु:खों से ग्रसित हुए। महर्षि दयानन्द ने संसार में सत्य ज्ञान वेदों का प्रकाश करने और प्राणी मात्र के हित के लिए वेदों का प्रचार व प्रसार किया और वेदों का पढ़ना-पढ़ाना व सुनना-सुनाना सभी मनुष्यों जिन्हें उन्होंनें आर्य नाम से सम्बोधित किया, उनका परम धर्म घोषित किया।

अब विचार करना है कि वेदों का ज्ञान किस प्रकार से प्राप्त किया जाये। इसका उत्तर है कि जिज्ञासु या विद्यार्थी को वेदों के ज्ञानी गुरू की शरण में जाना होगा। वह बालक को अपने साथ तब तक रखेगा जब तक की शिष्य वेदादि शास्त्रें की शिक्षा पूरी न कर ले। हम जानते हैं कि जब बच्चा जन्म लेता है तो उस समय वह अध्ययन करने के लिए उपयुक्त नहीं होता। लगभग 5 वर्ष की आयु व उसके कुछ समय बाद तक वह माता-पिता से पृथक रहकर ज्ञान प्राप्त करने के लिए योग्य होता है। ऐसे बालकों को उनके माता-पिता किसी निकटवर्ती गुरू के आश्रम में ले जाकर उस गुरू द्वारा बच्चों का प्रारम्भिक अध्ययन से आरम्भ कर सांगोपांग

thearyasamaj.org

वेदों का अध्ययन करा सकते हैं। उस स्थान पर जहां बालक-बालिकाओं को वेदों का अध्ययन व अध्यापन कराया जाता है ''गुरूकुल'' कहा जाता हैं। यह गुरूकुल कहां हों, इनका स्वरूप व अध्ययन के विषय आदि क्या हों इस पर विचार करते हैं। अध्ययन करने का स्थान माता-पिता व पारिवारिक जनों से दूर होना चाहिये जहां शिष्य अपने गुरू के सान्निध्य में रह कर निर्विघ्न अपनी शारीरिक व बौद्धिक उन्नति करने के साथ अपने श्रम व तप के द्वारा गुरू की सेवा कर सके। अध्ययन करने का स्थान वा शिक्षा का केन्द्र गुरूकुल किसी शान्त वातावरण में जहां वन, पर्वत व नदी अथवा सरोवर आदि हों, होना चाहिये। गुरू, शिष्यों व शृत्यों के आवास के लिये कुटियायें आदि उपलब्ध हों। एक गौशाला हों जिसमें गुरूकुल वासियों की आवश्यकता के अनुसार दुग्ध उपलब्ध हो। यदि अन्न आदि पदार्थों की भी व्यवस्था हों, तो अच्छा है अन्यथा फिर शिक्षा हेतु निकट के ग्राम व नगरों में जाना होगा। वर्तमान परिस्थिति के अनुसार भोजन वस्त्र आदि की भी सुव्यवस्था होनी चाहिये और पुस्तकें व अन्य आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध होनी चाहिये। यह सब सुव्यवस्था होने पर गुरूजी को पढ़ाना है व बच्चों को पढ़ना है। वेदों का ज्ञान शब्दमय होने से शब्द का ज्ञान शिष्य को गुरू से करना होता है। वेदों के शब्द रूढ़ नहीं हैं। वह सभी धातुज या यौगिक हैं। अत: धातु एवं यौगिक शब्दों के ज्ञान में सहायक पुस्तक व ग्रन्थों का होना आवश्यक है। सम्भवत: यह ग्रन्थ वर्णमाला, अष्टाध्यायी, धातु पाठ, महाभाष्य, निघण्टु व निरूक्त आदि ग्रन्थ होते हैं। गुरूजी को क्रमश: इनका व वेदार्थ में सहायक अन्य व्याकरण ग्रन्थों व शब्द कोशों का ज्ञान कराना है। गुरूकुल में अध्ययन पर कुछ आगे विचार करते हैं। हम जानते हैं कि हम वर्तमान में रहते हैं। बीता हुआ समय भूतकाल और आने वाला भविष्य काल कहलाता है। जब हम भाषा का प्रयोग करते हैं तो क्रिया पद को यथाव यकता भूत, वर्तमान व भविष्य का ध्यान करते हुए तदानुसार संज्ञा, सर्वनाम आदि का प्रयोग करते हैं। यह व्याकरण शास्त्र के अन्तर्गत आते हैं। अत: गुरूकुल में गुरूजी को शिष्य को पहले वर्णमाला व व्याकरण शास्त्र का ज्ञान कराना होता है। व्याकरण शास्त्र का ज्ञान हो जाने के बाद गुरूजी से प्रकीर्ण विषयों को जानकर वेद के ज्ञान में सहायक इतर अंग व उपांग ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं और उसके बाद वेदों का अध्ययन करने पर विद्या पूरी हो जाती है। विद्या पूरी होने पर शिष्य स्नातक हो जाता है। अब वह घर पर रहकर स्वाध्याय आदि करते हुए कृषि, चिकित्सा, ग्रन्थ लेखन, आचार्य व उपदेशक, पुरोहित, सैनिक, राजकर्मी, वैज्ञानिक, उद्योगकर्मी आदि विभिन्न रूपों में सेवा करके अपना जीवनयापन कर सकता है। वेद, वैदिक साहित्य एवं वेद व्याकरण का अध्ययन करने के बाद स्नातक अनेक भाषाओं को सीखकर तथा आधुनिक विज्ञान व गणित आदि विषयों का अध्ययन कर जीवन का प्रत्येक कार्य करने में समर्थ हो सकता है। यह कार्य उसको करने भी चाहिये। हम ऐसे लोगों को जानते हैं जिन्होंने गुरूकुल में अध्ययन किया और बाद में वह आईपीएस, आईएएस आदि भी बने। विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचिव, संस्कृत अकादमियों के निदेशक, सफल उद्योगपति आदि बने, अनेक सांसद भी बने। स्वामी रामदेव और आचार्य बालकृष्ण भी आर्य गुरूकुलों की देन हैं। अत: वेदों का अध्ययन कर भी जीवन में सर्वांगीण उन्नति हो सकती है, यह अनेक प्रमाणों से सिद्ध है। यह उन लोगों के लिए अच्छा उदाहरण हो सकता है जो अपने बच्चों को धनोपार्जन कराने की दृष्टि से महंगी पाश्चात्य मूल्य प्रधान शिक्षा दिलाते हैं और बाद में आधुनिक शिक्षा में दीक्षित सन्तानें अपने माता-पिता आदि परिवारजनों की उपेक्षा व कर्तव्यहीता करते दिखाई देते हैं।

प्राचीनकाल में गुरूकुल वैदिक शिक्षा के केन्द्र हुआ करते थे जो महाभारत काल के बाद व्यवस्था के अभाव में धीरे धीरे निष्क्रिय हो कर समाप्त हो गये। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में गुरूकुलीय शिक्षा पर विस्तार से प्रकाश डाला है। उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में स्कूलों में शिक्षा दी जाती थी। इसका उद्देश्य शासक वर्ग अंग्रेजों का भारत के बच्चों को अंग्रेजी के संस्कार देकर उन्हें गुप्त और लुप्त रूप से वैदिक संस्कारों से दूर करना और उन्हें अंग्रेजियत और ईसाईयत के संस्कारों व परम्पराओं के निकट लाना था। स्वामी दयानन्द ने अंग्रेजों की इस गुप्त योजना को समझा था और इसके विकल्प के रूप में गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली का अपने ग्रन्थों में विधान किया जिससे अंग्रेजी शिक्षा के खतरों का मुकाबला किया जा सके। स्वामी श्रद्धानन्द महर्षि दयानन्द सरस्वती के योग्यतम् अनुयायी थे। उन्होंने गुरूकुलीय शिक्षा के महत्व को समझा था और अपना जीवन अपने गुरू की भावना के अनुसार हरिद्वार

thearyasamaj.org

के निकट एक ग्राम कांगड़ी में सन् 1902 में गुरूकुल की स्थापना में समर्पित किया और उसको सुचारू व सुव्यवस्थित संचालित करके दुनियां में एक उदाहरण प्रस्तुत किया। स्वामी श्रद्धानन्द का यह कार्य अपने युग का एक क्रान्तिकारी कदम था। उनके द्वारा स्थापित गुरूकुल ने आज एक विश्वविद्यालय का रूप ले लिया है। आज समय के साथ देशवासियों व आर्य समाजियों का भी वेदों के प्रति वह अनन्य प्रेमभाव दृष्टिगोचर नहीं होता जो हमें महर्षि दयानन्द के साहित्य को पढ़ कर प्राप्त होता है। यहां वेद भी अन्य भाषाओं व उनके साहित्य की ही तरह एक विषय बन कर रह गये हैं और प्राय: अपना महत्व खो बैठे हैं। इसका एक कारण समाज की अंग्रेजीयत तथा आत्मगौरव, स्वधर्म व स्वसंस्कृति के अभाव की मनोदशा है। संस्कृत व वेदों का अध्ययन करने से उतनी अर्थ प्राप्ति नहीं हो पाती जितनी की अन्य विषयों को पढ़ कर होती है। नित्य प्रति ऐसे अनेक लोग सम्पर्क में आते हैं जो संस्कृत पढ़े है और पढ़ा भी रहे हैं परन्तु उनका पारिवारिक व समाजिक जीवन सन्तोषजनक नहीं है। ऐसे लोगों को देखकर लोगों में संस्कृत के प्रति उत्साह में कमी का होना स्वाभाविक है। हमारे आर्य समाज के विद्वानों व नेताओं को इस समस्या पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये। सरकार व निजी प्रतिष्ठानों में आज हिन्दी, अंग्रेजी व क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व है जहां संस्कृत प्राय: गौण, उपेक्षित व महत्वहीन है। वर्तमान में संस्कृत केवल धर्म संबंधी कर्मकाण्ड की भाषा बन कर रह गई है। समाज में इस मनोदशा को बदलकर संस्कृत के व्यापक उपयोग के मार्ग तलाशने होंगे। हमें लगता है कि संस्कृत पढ़े हमारे स्नताकों को हिन्दी व अंगेजी भाषा सहित आधुनिक ज्ञान, विज्ञान तथा गणित आदि विषयों का अध्ययन भी करना चाहिये जिससे वह सरकारी सेवा व अन्य व्यवसायों में अन्य अभ्यर्थियों के समान स्थान प्राप्त कर सकें जो सम्प्रति प्राप्त नहीं हो पा रहे हैं। संस्कृत के भविष्य से जुड़े एक प्रसंग का उल्लेख करना भी यहां उचित होगा। कुछ सप्ताह पूर्व वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी की विदुशी आचार्या डा. नन्दिता शास्त्री ने कहा कि संस्कृत भाषियों की संख्या दिन प्रति घट रही है। विगत जनगणना में यह 15-20 हजार ही थी। यदि यह 10 हजार या इससे कम हो जाती है तो सरकार के द्वारा संस्कृत को मिलने वाली सभी सुविधायें व संरक्षण बन्द हो जायेंगे और यह दिन संस्कृत प्रेमियों के लिए अत्यन्त दुखद होगा। स्वामी श्रद्धानन्द के बाद स्वामी दयानन्द के अनुयायियों ने स्वामी श्रद्धानन्द का अनुकरण कर अनेक गुरूकुल खोले जिनकी संख्या वर्तमान में 500 से अधिक है। यदि यह सभी गुरूकुल सुव्यवस्थित रूप से चलायें जा सकें तो यह वैदिक धर्म की रक्षा और उसके प्रचार प्रसार का सबसे बड़ा साधन सिद्ध हो सकते हैं और भविष्य में भी होंगे। वेद, वैदिक साहित्य, धर्म, संस्कृत और संस्कृति की रक्षा व देश के भावी स्वरूप की दृष्टि से में इन गुरूकुलों की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। इसका उन्नयन करना आर्य समाज का तो कार्य है ही साथ ही सरकार में वेदों को मानने वाले लोगों को वेदों की रक्षा व प्रचार के लिए प्रभावशाली योजनायें एवं कार्य करने चाहियें। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो 'धर्मो एव हतो हन्ति' की भांति धर्म रक्षा में प्रमाद करने से यह धर्म हमे ही मार देगा।

स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता थे। वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा सार्वदेशिक सभा के भी प्रधान रहे। शुद्धि आन्दोलन के भी वह प्रमुख सूत्रधार रहे और सम्भवत: यही उनकी शहादत का कारण बना। स्वामी जी का देश की आजादी के आन्दोलन में भी महत्वपूर्ण योगदान था। समाज सुधार के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियां अनेकों हैं। हम उनके जीवन को वेदों का मूर्त रूप देखते हैं जिसमें कहीं कोई कमी हमें दिखाई नहीं देती। काश कि महर्षि दयानन्द अधिक समय तक जीवित रहते तो श्रद्धानन्द उनके सर्वप्रिय शिष्य होते। आर्य समाज व महर्षि दयानन्द की भक्ति के लिए उन्होंने घर फूंक तमाशा देखा। उनका व्यक्तित्व आदर्श पिता, आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श समाज सुधारक, आदर्श नेता, आदर्श स्वतन्त्रा सेनानी, पत्रकार, साहित्यकार, लेखक, विद्वान, शिक्षा शास्त्री, धर्म गुरू, वेदभक्त, वेद सेवक, वेद पुत्र, ईश्वर पुत्र व ईश्वर के सन्देशवाहक का था। 23 दिसम्बर, 1926 को वह एक शडयन्त्र का शिकार होकर एक कातिल अब्दुल रसीद द्वारा शहीद कर दिये गये। हम समझते हैं कि उन्होंने अपने रक्त की साक्षी देकर वैदिक सिद्धान्तों व मान्यताओं की साक्षी दी है। हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हैं। जब तक सृष्टि पर मनुष्यादि प्राणी विद्यमान हैं, विवेकी दशवासी स्वामी श्रद्धानन्द जी के यश, कीर्ति, उनके कार्य और बलिदान को स्मरण कर उनसे प्रेरणा लेते रहेंगे।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001
फोन: 09412985121

thearyasamaj.org

महामना मदन मोहन मालवीय की 153वीं जयन्ती (25-12-2014)

गौरावशाली भारत भाग-2 के पृष्ठ 22 पर मालवीय जी के बारे में निम्न प्रकार लिखा गया है-

मालवीय जी सरल हृदय और ओजस्वी वक्ता थे। वे दो बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। मालवीय जी समाज में फैले अशिक्षा के अन्धकार से बहुत चिंतित थे। शिक्षा के अभाव को दूर करने के लिए उन्होंने वाराणसी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की जो उच्च शिक्षा का विश्वविख्यात केन्द्र है। बालिकाओं की शिक्षा के वे बहुत बड़े समर्थक थे। राष्ट्रीय शिक्षा के प्रसार में उनका अविस्मरणीय योगदान है।

\+ + + + +

लेखक-इन्द्र देव संस्थापक हिन्दू महासभा, बुलन्दशहर (उ.प्र.) मोबाइल-08958778443

मालवीय जी हिन्दुत्व की साक्षात प्रतिमूर्ति थे। आपने प्रयाग की हिन्दू समाज नामक संस्था में सक्रिय होकर 1880 में कार्य किए। आपने म्योर सेन्ट्रल कॉलेज में हिन्दू छात्रावास की स्थापना कराई। आपने हिन्दुस्तान-अभ्युदय-लीडर-सनातन धर्म पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ करके हिन्दुत्व का प्रचार किया। 1900 में सनातन धर्म महासभा की स्थापना की। भाई परमानन्द स्वामी श्रद्धानन्द के साथ 1915 में आपने अखिल भारत हिन्दू महासभा की स्थापना की जो अभी तक जीवित है।

आप हिन्दू महासभा में 1907 तक रहे। 22 वर्ष की अवधि में आप 5 बार राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। 1936 में मालवीय जी ने हिन्दू महासभा को मजबूत करने के लिए एक करोड़ रुपए इकट्ठे करने का संकल्प लिया था किन्तु उन्हें जब यह ज्ञात हुआ कि हिन्दू महासभा शीघ्र ही राजनीतिक दल बनने वाली है तो उन्होंने रुपये इकट्ठे करने का विचार छोड़ दिया और 1938 से 12-11-1946 तक नेहरू-गाँधी की हिन्दू विरोधी कांग्रेस का कार्य करते रहे।

आपने 1906 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की घोषणा की ताकि उसमें पढ़ने वाले छात्र हिन्दुत्व पर अभिमान करने वाले बनें, हिन्दू नेताओं का अपमान करने वाले उद्दण्ड छात्र नहीं हों। 1946 में हिन्दू महासभा के नेता धर्मवीर डा. मुंजे तथा भक्त रामशरण दास जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय गए तो कुछ उद्दण्ड छात्रों ने उन्हें साम्प्रदायिक बताकर उनका अपमान कर दिया। जब महामना को पता चला कि कांग्रेस देश का विभाजन धर्म के आधार पर स्वीकार करने वाली है तब उन्होंने आँसू बहाते हुए कहा था कि उनके जीवन की सबसे बड़ी गलती यह हुई कि उन्होंने हिन्दू महासभा छोड़कर कांग्रेस का साथ दिया। अत: मालवीय जी के समर्थकों से अपील है कि वे हिन्दू महासभा की तन मन धन से सहायता करें। यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जन्मदिन (मन के भाव)

\- **श्रीमति रेखा राजपूत**, I.T.B.P.

स्वामी जी जियो हजारों साल, जन्मदिन आए
बार-बार यही दुआ हमारी है।
बार-बार हो मंगल गान हमारा
फूलो-फलो दुआ है हमारी
रहो चमकते इच्छा है हमारी
जियो हजारों साल जन्म-दिन आए बार-बार
तुम रहो प्रेरणा स्रोत हमारे
तुम हो मार्गदर्शक हमारे
कुछ सीखा कुछ पाया तुमसे हमने
इस जन्मदिन के बेला पर
जियो हजारों..................
सुन्दर तेज है मुख पर तुम्हारे
ये तेज अमर रहे सदा तुम्हारा
बिखरे नूर सारे जहाँ में तुम्हारा
युग-युग जीओ आशीर्वाद बिखरे तुम्हारा
जियो हजारों........................

thearyasamaj.org

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

श्रीकृष्ण कुमार जी दलाल, सैक्टर-9, बहादुरगढ़	500/-
श्री शशीमदान देवलाली, महाराष्ट्र	2100/-
श्री विकास जून सुपुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह, सै-6, बहादुरगढ़	5100/-
श्रीमती अन्जू जून गुरु नानक कॉलोनी, बहादुरगढ़	500/-
श्री नरेन्द्र कुमार जी, बहादुरगढ़	500/-
श्री शिवम सैनी गली न. 1, विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़	1000/-
श्री राजेन्द्र जी सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री राकेश जी सुपुत्र श्री महेन्द्र सिंह ओहल्याण, रोहतक	500/-
श्री रोहताश पहलवान, खेड़ी आसरा	2100/-
श्रीमती सुशीला एवं ज्योति सुपुत्री श्री राजपाल जी ओहल्याण गढ़ी सांपला, रोहतक	1111/-
श्री रमीकेश जी ओहल्याण, गढ़ी साँपला रोहतक	511/-
लिखा लीसा कैमिकल्स एम.आई.ई., बहादुरगढ़	1600/-
मेघाली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र शर्मा जी टीचर कॉलोनी, बहा.	2000/-
श्रीमती गीता गुलाटी, बहादुरगढ़	501/-
मा. मुकेश जी दलाल, बहादुरगढ़	2100/-
श्रीमती आशा जी, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती रामदुलारी बंसल वैदिक वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़	1000/-
श्रीमती मायावती मदान, बहादुरगढ़	500/-
श्री जयदेव जी हसीजा, गुड़गांव	1000/-
श्री संजय मल्होत्रा जी एरोल फारम्यूलेशन प्रा. लि. आसौदा रोड, बहादुरगढ़	5000/-
स्व. पं. यादराम जी (विनोद जी, प्रमोद जी), नजफगढ़	8200/-
स्व. सत्यपाल सिंह मलिक (कर्ण आर्य) टीचर कॉलोनी, बहा.	1000/-
स्व. राजेन्द्र जी दूहन (श्री सतेन्द्र जी, जितेन्द्र जी), गोहाना	3100/-
श्रीमती लाडो देवी पत्नी स्व. श्री रामस्वरूप जी कुलासी	2100/-
श्री प्रभुदयाल जी दुकराल एवं शरद दुकराल मनोहर नगर, दि.	600/-
स्व. भूरा देवी जी की स्मृति मध्य टीकरी कला, दिल्ली	1100/-
श्री श्री ओम जी अहलावत, बहादुरगढ़	5100/-
श्री अशोक जी छिकारा, सैक्टर-2, बहादुरगढ़	500/-
डॉ. राजेन्द्र जी शर्मा, प्रबन्ध निदेशक, ब्रह्मशक्ति अस्तपाल,बहा.	5100/-
श्री रतन सिंह प्रधान जी निजामपुर, दिल्ली	11100/-
श्री अजीत सिंह जी दराल, टीकरी कला दिल्ली	5100/-
अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, दिल्ली	15000/-
श्रीमती पुष्पा, सत्यानन्द आर्य, पंजाबी बाग, दिल्ली	3100/-
श्रीमती सुशीला शत्रुधन लाल गुप्ता रांची, झारखण्ड	3100/-
श्री तेजपाल सिंह प्रधान, टीकरी कंला, दिल्ली	500/-
मा. दलबीर जी बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती राजवती पत्नी सुबेदार रामसिंह, बहादुरगढ़	2100/-
श्री अमीर सिंह जी पुनिया, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री हरभजन आर्य, फर्रूखनगर, गुड़गांव	500/-
मा. हरी सिंह जी टीचर कॉलोनी, बहादुरगढ़	500/-
श्री राजबीर आर्य धर्मविहार, बहादुरगढ़	500/-
आचार्य रमेश झज्जर	500/-
श्री सुरेन्द्र जी बुद्धिराजा, कीर्तिनगर, दिल्ली	1100/-
मयंक-दिवस भुटानी कीर्ति नगर, दिल्ली	500/-
वीणा ओबराय, कीर्तिनगर, नई दिल्ली	2100/-
श्री करतार सिंह सुपुत्र श्री जिले सिंह टीकरी कलां, दिल्ली	501/-
श्री राजेश जी राठी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री नरेश कौशिक जी विधायक, बहादुरगढ़	5100/-
श्री दर्शन जी अग्निहोत्री (श्रीतरूण जी, वरूण जी), दिल्ली	10000/-
श्री राजसिंह राठी, दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	1100/-
श्री सतीश जी छिकारा, चेयरमेन जिला परिषद, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती आशा रानी सुपुत्री स्व. पं. श्री नत्थुराम शर्मा जी गुरुनानक कॉलोनी, बहादुरगढ़	1101/-
पुरी ऑयल मील बहादुरगढ़	2100/-
प्रि. कर्ण सिंह जी डबास माजरा से दान प्राप्त	2100/-

विविध भोजन

श्री भूपेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री सतबीर सिंह दलाल, मातन
1 समय का विशिष्ट भोजन

श्री बृजपाल जी सहगल, वैदिक वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़
1 समय का विशिष्ट भोजन

विविध वस्तुएं

श्रीमती मनोहरी देवी पत्नी श्री चन्द्र सिंह चिकारा मेला ग्राउण्ड, बहादुरगढ़
65 मीटर कपड़ा

श्री मोक्षदलाल अनाजमंडी, बहादुरगढ़ — 1 कट्टा गेहूं

श्रीमती शालिनी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़ — 50 किलो गेहूं

श्री रतन दास जी सांपले वाले कबीर आश्रम, बहादुरगढ़
आटा, दाल, चावल, मसाले आदि तथा 5100/- रूपये

श्रीमती मीराबाई कश्मीरी कालोनी, बहादुरगढ़ — आटा 20 किलो, मसाले, चावल 10 कि., चीनी 5 कि., तेल 4.5 कि., नमक 5 कि., दाल 5 कि.

श्रीमती निर्मला देवी पत्नी श्री सुरेश दलाल जी बहादुरगढ़ — रजाई, दरी

श्रीमती सरला देवी जी देवनगर, बहादुरगढ़ — 101/-रूपये, रजाई गद्दा

श्री भूपसिंह डबास, शनि मन्दिर टीकरी कला दिल्ली — 2 कनस्तर तेल

श्री हिमांशु जी सुपुत्र श्री हरीश कुमार रेलवे रोड, बहादुरगढ़
चावल 10 किलो, दाल 4 किलो

thearyasamaj.org

श्री राकेश सुपुत्र श्री महेन्द्र सिंह ओहल्याण गढ़ी सांपला
50 किलो गेहूं, 20 किलो चावल

श्री भूपिन्द्र कुमार नागपाल, कीर्तिनगर, दिल्ली
1100 रूपये, 10 किलो आटा, 5 किलो चीनी

श्री शुक्ला जी नैनपाल मन्दिर, टिकरी कला, दिल्ली 2 टीन तेल

श्री बिहारी लाल राजेन्द्र प्रसाद, दुकान न. 6 अनाजमण्डी, बहादुरगढ
50 किलो चावल

श्रीमती विमला सिंघल वैदिक वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़ 1 क्विंटल गेहूं

श्री महेन्द्र सिंह जी राणा, सोहटी 20 किलो चने

श्री लक्ष्मीनारायण जी अड़ीचवाल, काठमण्डी, बहादुरगढ़ 50 किलो आटा

श्री सतीश कुमार जी सुपुत्र वैध देवशर्मा टीकरी दिल्ली 50 किलो बाजरा

पूरी ऑयल मील, बहादुरगढ़ 2 टीन सरसो का तेल

श्री नितिन चुघ सुपुत्र श्री सोमनाथ जी सन्त कॉलोनी, बहादुरगढ़
नमक 2 किलो, आटा 20 किलो

गौशाला हेतु प्राप्त दान

श्री सुरेन्द्र सिंह नुना माजरा 3100/-

श्रीमती निर्मला देवी जी देवनगर, बहादुरगढ़ 1500/-

श्री रामयादव जी के सत्संग अवसर पर प्राप्त गुड़गांव 900/-

श्री कक्कड़ जी स्मृति मध्य शिवाजी नगर, गुड़गांव 500/-

श्री गिरधारी लाल अरोड़ा, श्री सुभाष अरोड़ा,
श्री रमेश अरोड़ा, सैक्टर-14, गुड़गांव 500/-

श्री सुनील कुमार सुपुत्र श्री धर्मपाल ग्रा. कन्हेरी, भि. 500/-

श्री प्रदीप वर्मा स्मृति मध्य शिवाजी नगर, गुड़गांव 500/-

श्री सोहनलाल मनचन्दा जी की स्मृति मध्य शिवाजी नगर,गु. 500/-

श्री अशोक कुमार जी, ग्रा. नारंपुर डा. शिकोहपुर, गुड़गांव 1000/-

ईश्वर देवी उडेजा पति की स्मृति मध्य शिवाजी नगर, गु. 500/-

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

श्रीमती चन्द्रकलां जी राजपाल, पश्चिम विहार, दिल्ली 1000/-

श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार नई दिल्ली-63 500/-

डॉ. पुष्पलता वर्मा, विकासपुरी, नई दिल्ली 300/-

श्रीमती प्रवीण मेहन्दीरत्ता, विकासपुरी, दिल्ली 300/-

श्री सेठी परिवार, विकासपुरी, नई दिल्ली 200/-

श्री एच.पी. खंडेलवाल विकासपुरी, नई दिल्ली 200/-

फर्रूखनगर आश्रम के लिए

श्रीमती गांधार कला जी राजपाल पश्चिम विहार, दिल्ली 1000/-

श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली 1000/-

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्वेष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :

राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष–41548503, चलभाष–9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 दिसम्बर 2014 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

thearyasamaj.org

स्वामी धर्ममुनि जी के जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां

यज्ञ ब्रह्मा आचार्य राजहंस मैत्रेय मुख्य यजमान सुरेन्द्र बुद्धिराजा सपत्नीक

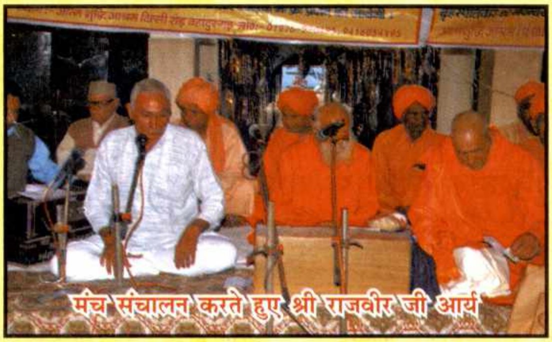
मंच संचालन करते हुए श्री राजवीर जी आर्य

भजन प्रस्तुत करते हुए श्रीमती सुकृति माथुर एवम् श्री अविरल माथुर

भजन प्रस्तुत करते हुए कन्या गुरुकुल लोवा की छात्राएं

श्रद्धालुगण

अपना वक्तव्य देते हुए श्री सुखदेव आर्य तपस्वी जी

वक्तव्य देते हुए महात्मा लाल दास जी

श्रद्धालुगण

आत्म - शुद्धि - पथ मासिक

दिसम्बर 2014

छपी पुस्तक - पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2012-14

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम

बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

स्वामी धर्ममुनि जी के जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां

चौ. रतन सिंह प्रधान को स्मृति चिन्ह देते हुए श्रीश्री ओम अहलावत, श्री सत्यपाल वत्स आर्य, पुरुषार्थ मुनि एवम् दर्शनमुनि

चौ. अजित सिंह दराल को स्मृति चिन्ह देते हुए आचार्य मैत्रेय जी, श्रीश्री ओम अहलावत, श्री सत्यानन्द जी आर्य एवम् मा. करतार सिंह जी

डॉ. राजेन्द्र शर्मा को स्मृति चिन्ह देते हुए आचार्य मैत्रेय जी, श्री श्रीओमअहलावत, श्री सत्यपाल वत्स आर्य, पुरुषार्थ मुनि एवम् चर्तुभुज जी

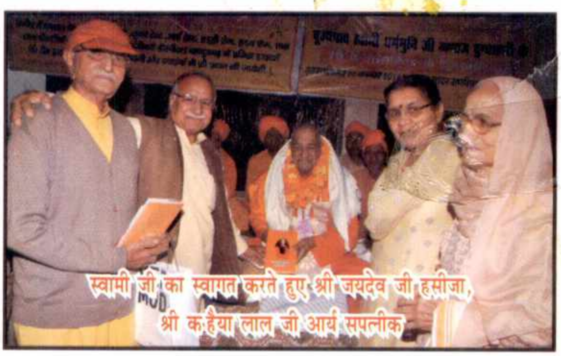

स्वामी जी का स्वागत करते हुए श्री जयदेव जी हसीजा, श्री कन्हैया लाल जी आर्य सपत्नीक

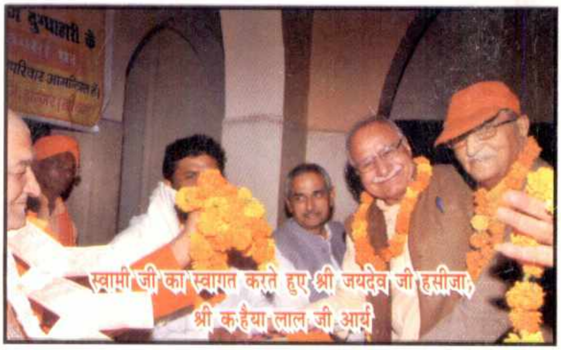

स्वामी जी का स्वागत करते हुए श्री जयदेव जी हसीजा, श्री कन्हैया लाल जी आर्य

स्वामी जी का स्वागत करते हुए चौ. चन्द्रभान जी